मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

उत्तरशक्ति

हिन्दी दैनिक

मुंबई
वर्षः 9 अंक 66
सोमवार, 14 सितम्बर 2026
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

हर खबर निष्पक्षता के साथ

2029 तक एनडीए शासित 21 राज्यों में लागू होगा यूनिफॉर्म सिविल कोड : अमित शाह

मुंबई, 13 सितम्बर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि यूनिफॉर्म सिविल कोड (UCC) - जिसका मकसद शादी, तलाक, विरासत और गोद लेने जैसे मामलों के लिए धर्म से परे एक समान पर्सनल लॉ लागू करना है - उसे 2029 से पहले BJP के नेतृत्व वाले NDA की सरकार वाले सभी 21 राज्यों में लागू किया जाएगा। मुंबई में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में शाह ने कहा हमने कई राज्यों में यूनिफॉर्म सिविल कोड (UCC) पेश किया है। मुझे भरोसा है कि हम 2029 से पहले BJP के नेतृत्व वाले NDA की सरकार वाले सभी 21 राज्यों में UCC लागू कर देंगे। शाह ने सरकार की सुरक्षा नीति पर भी जोर दिया और कहा कि सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस (सख़्त रवैये) की नीति स्थापित की है, साथ ही सभी क्षेत्रों में सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई है। शाह ने कहा कि 2014 से पहले भारत भ्रष्टाचार, जातिवाद और परिवारवाद की राजनीति के दौर से गुजर रहा था, लेकिन BJP की सरकार के तहत अब यह काम-काज पर आधारित राजनीति की ओर बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि भारत की विदेश और रक्षा नीतियों को एक मजबूत आधार मिला है, जिसमें सरकार का नजरिया भारत पहले (India First) की सोच से तय होता है और राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी जाती है।

शाह ने भारत की आर्थिक तरक्की का भी ज़िक्र किया और कहा कि देश फ़्रैजाइल फाइव (कमजोर पाँच) अर्थव्यवस्थाओं

की श्रेणी से निकलकर शीर्ष पाँच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है। उन्होंने पहली तिमाही में 7.8% की जीडीपी वृद्धि की ओर इशारा करते हुए कहा कि भारत प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे आगे है। उन्होंने सरकार द्वारा अनुच्छेद 370, नक्सलवाद और पूर्वोत्तर की स्थिति से निपटने के तरीकों पर भी प्रकाश डाला और इन्हें ऐसी पुरानी चुनौतियाँ बताया, जिन्होंने दशकों तक भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा पैदा किया था।

जब उनसे पूछा गया कि क्या राज्य में चुनाव से पहले 1951 के आधार वर्ष का इस्तेमाल करके मणिपुर में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स (NRC) लागू किया जाएगा और क्या पूरे देश में NRC लागू करने की कोई समय-सीमा तय है, तो शाह ने कहा कि मणिपुर में सहयोगियों और राजनीतिक दलों के साथ बातचीत चल रही है।

उन्होंने कहा, जैसे ही कोई फैसला लिया जाएगा, हम आपको बता देंगे। अवैध रूप से आकर बसने वालों के मुद्दे पर शाह ने सरकार का रुख दोहराया कि अवैध प्रवासियों की पहचान की जाएगी और उन्हें देश से बाहर निकाला जाएगा, लेकिन इसके लिए जिस तरीके पर विचार किया जा रहा है, उसका ब्योरा नहीं दिया जाएगा। भाषा को लेकर हो रही बहस पर शाह ने कहा कि मातृभाषा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और राज्य का नेतृत्व इस मुद्दे का समाधान निकालेगा। उन्होंने कुछ लोगों पर लोगों के बीच फूट डालने की कोशिश करने का आरोप भी लगाया।

ईरान के राष्ट्रपति ने ब्रिक्स में राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापार बढ़ाने पर दिया जोर, एकतरफा प्रतिबंधों पर साधा निशाना

नई दिल्ली, 13 सितम्बर। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन ने रविवार को ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के अंतरिम सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि उभरती अर्थव्यवस्थाओं को मौजूदा वित्तीय और व्यापार व्यवस्थाओं पर अत्यधिक निर्भरता से राजनीतिक झटकों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने ब्रिक्स देशों से राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापार बढ़ाने और एक समावेशी वैश्विक आर्थिक ढांचा बनाने की अपील की ईरानी राष्ट्रपति ने एक दिन पहले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भी रखे थे। ब्रिक्स नई दिल्ली घोषणा पत्र में भी काफी हद तक उनकी इन भावनाओं का ख्याल रखा गया है। ईरान ने राजनीतिक दबाव बनाने के लिए आर्थिक साधनों के बढ़ते इस्तेमाल की आलोचना की थी। ये टिप्पणियां अमेरिका और ईरान के बीच तनाव तथा ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों के विस्तार के बीच आई हैं।

पश्चिमी शक्तियों पर निशाना साधते हुए पेजेश्कियन ने कहा कि एकतरफा प्रतिबंध सीधे वैश्विक खाद्य सुरक्षा और लोगों की भलाई को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे में ब्रिक्स को अधिक संतुलित, समावेशी और न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था बनाने में बड़ी भूमिका निभानी चाहिए। लचीलापन, सहयोग और स्थिरता को व्यावहारिक कार्रवाई में बदलना होगा।उन्होंने कहा कि सीमित वित्तीय और व्यापार प्रणालियों पर अत्यधिक निर्भरता अर्थव्यवस्थाओं को राजनीतिक झटकों के प्रति कमजोर बनाती है। इसलिए राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापार का विस्तार किया जाए और न्यू डेवलपमेंट बैंक को मजबूत किया जाए, ताकि ब्रिक्स सदस्य देशों की आर्थिक क्षमता बढ़े।आर्थिक मजबूती सुरक्षा के बिना टिकाऊ नहीं हो सकती।पेजेश्कियन ने अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर सैन्य हमलों का जिक्र करते हुए कहा कि ईरान के आर्थिक, ऊर्जा और विकास संबंधी बुनियादी ढांचे पर हमलों के परिणाम राष्ट्रीय सीमाओं से आगे जा सकते हैं और क्षेत्रीय तथा वैश्विक स्तर पर असर डाल सकते हैं। उन्होंने कहा कि ईरानी जनता पहले ही भारी कीमत चुका चुकी है। नागरिक मारे गए हैं और दशकों में बना बुनियादी ढांचा क्षतिग्रस्त हुआ है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय की जिम्मेदारी है कि नागरिकों की रक्षा करे और नागरिक ठिकानों पर हमलों को सामान्य बनाने से रोके। पेजेश्कियनने ब्रिक्स का सफल आयोजन के लिए भारत का खास तौर पर धन्यवाद कहा।

ब्रिक्स मेहमानों की थाली बनी सियासी मुद्दा, राहुल गांधी की टिप्पणी का किरेन रिजिजू ने दिया जवाब

नई दिल्ली, 13 सितम्बर। नई दिल्ली में हुए ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के भव्य रात्रिभोज में पूरी तरह शाकाहारी खाना परोसे जाने को लेकर राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो गई है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर कहा कि भारत में 80 फीसदी लोग मांसाहारी हैं और भारतीय मांसाहारी खाना स्वादिष्ट होता है। राहुल गांधी की इस टिप्पणी पर केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने पलटवार किया। उन्होंने कांग्रेस पर विदेशी मेहमानों को परोसे गए खाने को राजनीतिक मुद्दा बनाने का आरोप लगाया। रिजिजू ने कहा कि ब्रिक्स देशों के नेताओं ने भारतीय शाकाहारी व्यंजनों का भरपूर आनंद लिया।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान हुए भव्य रात्रिभोज में कई तरह के शाकाहारी व्यंजन परोसे गए थे।

इसके अगले दिन राहुल गांधी ने भारत के मांसाहारी खाने की तारीफ की। उन्होंने सोशल मीडिया पर छोले भटूरे की तस्वीर साझा करते हुए लिखा कि जानकारी के लिए बता दूं, 80 फीसदी भारतीय मांसाहारी हैं। उन्होंने भारतीय मांसाहारी खाने को स्वादिष्ट बताया और अपनी बहन के छोले भटूरे की भी तारीफ की। राहुल गांधी की टिप्पणी के बाद केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ब्रिक्स देशों के नेताओं को परोसे गए खाने के मेनू को भी राजनीतिक मुद्दा बना रही है। रिजिजू ने कहा कि भारत आए मेहमानों ने भारतीय शाकाहारी व्यंजनों का खूब आनंद लिया। उन्होंने कहा कि ये व्यंजन स्वाद और पोषण से भरपूर होने के साथ-साथ देश की अलग-अलग क्षेत्रीय परंपराओं को भी दिखाते हैं। ब्रिक्स के भव्य रात्रिभोज में शुरूआत से लेकर मिठाई तक पूरी तरह शाकाहारी व्यंजन शामिल थे। शुरूआत में खांडवी मिले और खुम्ब गलौटी परोसे गए। खांडवी मिले सरसों, नारियल और करी पत्तों के तड़के के साथ तैयार किया गया बेसन का रोल था। वहीं खुम्ब गलौटी पुदीने के दानों के साथ परोसे गए पैन पर सेंके हुए मशरूम कबाब थे।

राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने 'ग्रेटर ब्रिक्स' का रखा प्रस्ताव, अमेरिका और यूरोप पर बिना नाम लिए कसा तंज

नई दिल्ली, 13 सितम्बर। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान चीनी राष्ट्रपति चिनफिंग ने ग्रेटर ब्रिक्स का प्रस्ताव रखा है। चिनफिंग ने अमेरिका और पश्चिमी देशों पर बिना नाम लिए निशाना साधते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय मामलों में 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' का सिद्धांत अब मान्य नहीं है और सभी देशों को संप्रभु समानता मिलनी चाहिए। ब्रिक्स देशों को संबोधित करते हुए चिनफिंग ने 'ताकत ही सही है' वाली विचारधारा की निंदा की। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश का आकार, शक्ति या आर्थिक स्थिति चाहे जो भी हो, वैश्विक समुदाय में सभी देशों को समान दर्जा मिलना चाहिए।

इसके साथ ही चिनपिंग ने ग्लोबल साउथ को एकजुट करने और ब्रिक्स

सहयोग को मजबूत करने के लिए एआई (AI) ओपन-सोर्स कम्युनिटी, डिजिटल इकोसिस्टम और इंजीनियर ट्रेनिंग एलायंस समेत 5 प्रमुख वैश्विक पहलों की घोषणा की। चिनफिंग ने कहा, ग्लोबल साउथ अपने सामूहिक उदय के साथ विश्व बहुध्रुवीयता का एक प्रमुख चालक बन गया है। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य अस्थिर है और जोखिमों और चुनौतियों से भरा हुआ है। विश्व में स्थिरता लाने और इसे एक बेहतर स्थान बनाने के लिए, ब्रिक्स देशों को ऐतिहासिक पहल को अपनाना होगा, वैश्विक दक्षिण को एकजुट करना होगा, अंतरराष्ट्रीय मामलों में एक सक्रिय, स्थिर और सकारात्मक शक्ति बनना होगा और समस्त मानवता के कल्याण को आगे बढ़ाना होगा। चिनफिंग ने जोर देकर कहा, ताकत ही सत्य है का सिद्धांत यहां मान्य नहीं होगा और इसे बहुत पहले ही त्याग दिया जाना चाहिए था। वैश्विक दक्षिण देशों को संयुक्त रूप से अंतरराष्ट्रीय मामलों में कानून के शासन की रक्षा करनी चाहिए, संप्रभु समानता, आंतरिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान सहित अंतरराष्ट्रीय संबंधों के बुनियादी मानदंडों की रक्षा करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अंतरराष्ट्रीय कानून और अंतरराष्ट्रीय नियम सभी पर बिना किसी दोहरे मापदंड के लागू हों। चिनफिंग ने ब्रिक्स देशों के बीच तकनीकी और औद्योगिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए 5 मुख्य पहलों की घोषणा की। इसके तहत चीन 'ब्रिक्स एआई ओपन-सोर्स समुदाय' की स्थापना का नेतृत्व करते हुए बड़े भाषा मॉडलों (LLMs) के विकास, एआई प्रशिक्षण और खुले पारिस्थितिकी तंत्र (Open Ecosystem) के निर्माण में सहायता करेगा। इसके अलावा, व्यापार और औद्योगिक समन्वय को सुगम बनाने के लिए 'ब्रिक्स विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) साझेदारी' और डिजिटल कौशल विकास के लिए 'ब्रिक्स डिजिटल इकोसिस्टम क्लाउड प्लेटफॉर्म' की स्थापना का प्रस्ताव दिया गया। साथ ही, चीन ब्रिक्स देशों में विनिर्माण (Manufacturing) को आधुनिक बनाने के लिए स्मार्ट फैक्ट्रियों के निर्माण में मदद करेगा और इंजीनियरों की योग्यता को वैश्विक पहचान दिलाने व संयुक्त विकास के लिए 'ब्रिक्स इंजीनियर प्रशिक्षण गठबंधन' का गठन करेगा।

हत्या के आरोपी ने जमानत मिलने के बाद निकाला विजय जुलूस, नाराज सुप्रीम कोर्ट ने कहा- अदालत में पेश करो

नई दिल्ली, 13 सितम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने हत्या के एक आरोपित द्वारा जमानत मिलने के बाद विजय जुलूस निकालने के मामले को गंभीरता से लेते हुए हरियाणा पुलिस को निर्देश दिया है कि वह आरोपित को न्यायालय में पेश करे। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और संदीप मेहता की पीठ ने अपने आदेश में यह भी कहा कि आरोपित के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी होने के बावजूद उसे हिरासत में लेकर न्यायालय में पेश नहीं किया गया। पीठ ने शिकायतकर्ता के वकील की इस दलील का संज्ञान लिया कि आरोपित विशाल ने पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट से जमानत मिलने के बाद विजय जुलूस निकाला था और गवाहों को धमकाया था। अदालत ने मामले पर आठ सितंबर को सुनवाई के दौरान गौर किया कि आरोपित की ओर से उसका वकील पेश हुआ था। पीठ ने आरोपित को पहले आत्मसमर्पण करने

का निर्देश दिया और उसके बाद जमानत का अनुरोध करने को कहा। साथ ही पीठ ने फटकार लगाते हुए कहा- जमानत मिलने पर विजय जुलूस निकालना उचित नहीं है। अदालत ने यह भी कहा कि अगस्त में जारी गैर-जमानती गिरफ्तारी वारंट पर अब तक पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की है। शीर्ष अदालत ने चरखी दादरी जिले के पुलिस अधीक्षक को निर्देश दिया कि गैर-जमानती वारंट के तहत कार्रवाई की जाए और आरोपित को सुनवाई की अगली तारीख 21 सितंबर को इस अदालत में पेश किया जाए।

'कूटनीति से सब कुछ संभव', ब्रिक्स के मंच से भारत का बड़ा संदेश

नई दिल्ली, 13 सितम्बर। दुनिया आज कई गंभीर संकटों से घिरी है। पश्चिम एशिया में जारी घमासान, चौथे वर्ष में प्रवेश कर चुका रूस-यूक्रेन युद्ध और अमेरिका की लगातार बदलती टैरिफ नीतियों ने वैश्विक व्यवस्था के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। ऐसे समय में ब्रिक्स 2026 शिखर सम्मेलन में नई दिल्ली घोषणापत्र का अंगीकार किया जाना अपने आप में महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

यह इसलिए भी अहम है क्योंकि सम्मेलन से पहले यह सवाल उठ रहे थे कि जब सदस्य देशों के बीच कई मुद्दों पर गंभीर मतभेद हैं, तब क्या वे किसी साझा घोषणा पर सहमत हो पाएंगे। लेकिन नई दिल्ली में इन आशंकाओं को विराम मिला। मतभेदों के बावजूद सदस्य देशों ने

बातचीत के रास्ते से सहमति बनाने का प्रयास किया।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने ब्रिक्स को ऐसा मंच बनाने का प्रयास किया, जहां परस्पर सम्मान, सहयोग और साझा विकास को प्राथमिकता मिले सम्मेलन ने यह भी दिखाया कि ब्रिक्स अब केवल उभरती अर्थव्यवस्थाओं की सालाना बैठक नहीं रह गया है। यह वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए अपनी आवाज को मजबूती से रखने का महत्वपूर्ण मंच बनता जा रहा है।

इस संदर्भ में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ब्रिक्स के प्रति रवैया भी ध्यान देने योग्य है। ट्रंप पहले समूह को खारिज करते हुए इसे मृतप्राय बता चुके हैं और इसके सदस्य देशों पर ऊंची दरों के टैरिफ लगाने की धमकियां भी देते रहे हैं। इसके बावजूद नई दिल्ली शिखर सम्मेलन ने एक अलग तस्वीर पेश की। सदस्य देशों के बीच मतभेद जरूर रहे, लेकिन वे एक साझा घोषणा पर सहमत हुए और बहुपक्षवाद, बहुध्रुवीय व्यवस्था तथा अंतरराष्ट्रीय कानून के महत्व को फिर रेखांकित किया।

DAKS REHAB CENTRE
(PARALYSIS PHYSIOTHERPHY CENTER AND OLD AGE HOME)
Contact us: 9820519851
विल्डिंग नंबर 3, प्लॉट नंबर 3, आदर्श घरकुल सोसायटी सायन कोलीवाडा जीटीबी नगर मुंबई-37

* Stroke/Paralysis/Complete Rehab Centre
* बाहर से आये रोगी और उनके परिजनो के ठहरने कि व्यवस्था
* वृद्ध लोगों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध
* DM/HT/THYROID इन सब से कैसे बचें
* NGO में मिलनेवाली सहायता को लोगों में देना
* चिकित्सा उपकरणो को किराये और बिक्री सुविधा उपलब्ध
* एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध
* पोस्ट ऑपरेटिव रिहैब सेंटर
* मरीजों के लिए घर पर 12 और 24 घंटे जीडीए परिचारक
* विशेषज्ञ डॉक्टरो से ऑनलाइन और ऑफलाइन परामर्श की सुविधा उपलब्ध
* मासिक ईएमआई के आधार पर व्यक्तीयों, परिवारो और माता-पिता के लिए स्वास्थ्य निती की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध

TIWARI'S SARASWATI CLASSES
Since 1992
Parents' First Choice for 34+ Years
Prof. Dr. Dayanand Tiwari
Founder & Academic Director
ADMISSIONS OPEN
9th | 10th | 11th | 12th SCIENCE
NEET | JEE | MHT-CET
10 DAYS FREE DEMO
Attend Classes • Experience Our Teaching
Take Admission After Satisfaction
(No Hidden Conditions)
✓ 34+ Years of Academic Excellence
✓ Experienced & Dedicated Faculty
✓ Personal Attention
✓ Printed Notes & Regular Tests
✓ Strong Foundation for Boards & Competitive Exams
Santacruz Branch
101 Sai Chambers, Opp. Santacruz Railway Station (East), Near Depot, Santacruz (E), Mumbai-400055
Sion Branch
Opp. SIES College (Old), Near Gurukripa Hotel, Sion (West), Mumbai
Limited Seats / Small Batch Size
CALL NOW:
7738007373

NEW LIGHT CLASSES
TRADITION OF EXCELLENCE
2nd Floor, Sheetal Bldg. Near Diamond Talkies, L. T. Road, Borivali (West) Mumbai - 400 092 Maharashtra
ADMISSIONS OPEN
ALL OVER INDIA
ENROLL NOW

(ONLINE/OFFLINE)
Courses Offered
● Std. XI & XII (Sci.)
● NEET
● JEE (Main & Advance)
● MHT-CET
● Polytechnic & Engg
● Physics and Maths (ICSE, CBSE, ISC)
M: 9833240148 | E: edu@newlightclasses.com | W: www.newlightclasses.com

भगवान गणेश : मंगल, समृद्धि और विकसित भारत के प्रेरणास्त्रोत

-ललित गर्ग

गणेशजी के व्यक्तित्व में छिपे प्रबंधन, नेतृत्व, ज्ञान, अनुशासन और समावेशी विकास के सूत्रों को आत्मसात कर भारत 2047 के संकल्प को नई दिशा दी जा सकती है

भगवान श्री गणेश भारतीय संस्कृति के ऐसे बहुआयामी एवं सर्वस्वीकार्य देवता हैं, जिनका स्मरण किसी भी शुभ कार्य के प्रारंभ में किया जाता है। वे केवल विघ्नहर्ता और मंगलकर्ता के रूप में पूजित नहीं हैं, बल्कि उनका संपूर्ण व्यक्तित्व ज्ञान, विवेक, दूरदर्शिता, नेतृत्व, धैर्य, आत्मसंयम, संवाद, समावेशिता और कर्मशीलता का अद्भुत संदेश देता है। आज जब भारत विकसित भारत 2047 के संकल्प के साथ आर्थिक शक्ति, तकनीकी क्षमता, सामाजिक समरसता और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब गणेशजी के प्रतीकात्मक व्यक्तित्व को केवल पूजा तक सीमित रखने के बजाय उनके जीवन-संदेश को राष्ट्रीय चरित्र और विकास-दृष्टि का आधार बनाना समय की बड़ी आवश्यकता है। गणेश चतुर्थी केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और राष्ट्रनिर्माण की प्रेरणा का पर्व बन सकती है।

गणेशजी का सबसे बड़ा संदेश है—शुभारंभ करो, लेकिन विवेक के साथ। किसी भी कार्य के पहले गणेशजी का स्मरण इस बात का प्रतीक है कि सफलता केवल गति से नहीं, सही दिशा से मिलती है। विकसित भारत का निर्माण भी केवल बड़े आर्थिक आंकड़ों, आधुनिक शहरों, नई तकनीक और विशाल परियोजनाओं से नहीं होगा। इसके लिए ऐसी विकास-दृष्टि चाहिए जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ मानवीय संवेदना, नैतिकता, पर्यावरण-संतुलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक न्याय का समन्वय हो। गणेशजी का स्मरण हमें बताता है कि विकास का पहला कदम बाहर नहीं, भीतर उठता है—विचारों की शुद्धता और संकल्प की दृढ़ता से। गणेशजी का गजमुख उनकी सबसे विशिष्ट पहचान है। हाथी भारतीय मानस में बुद्धि, स्मृति, धैर्य और शक्ति का प्रतीक रहा है। बड़ा मस्तक हमें बड़ा सोचने की प्रेरणा देता है। आज भारत को भी सीमित सोच से बाहर निकलकर वैश्विक चुनौतियों के अनुरूप दीर्घकालीन और व्यापक दृष्टि विकसित करनी होगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित ऊर्जा, जैव-प्रौद्योगिकी और नई औद्योगिक क्रांति के युग में वही राष्ट्र आगे बढ़ेगा जो ज्ञान को अपनी सबसे बड़ी शक्ति बनाएगा। गणेशजी का मस्तक मानो संदेश देता है—ज्ञान जितना व्यापक होगा, विकास उतना ही दूरगामी होगा। उनके बड़े कान लोकतांत्रिक नेतृत्व की अनूठी सीख देते हैं। अच्छा नेतृत्व वह नहीं जो केवल बोलता है, बल्कि वह है जो सुनता है। जनता की आकांक्षाओं, युवाओं के सपनों, किसानों की समस्याओं, श्रमिकों की चुनौतियों, महिलाओं की अपेक्षाओं और वंचित वर्गों की आवाज को सुनना ही संवेदनशील शासन की पहचान है। भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बने, इसके लिए विकास का मॉडल जनभागीदारी पर आधारित होना चाहिए। गणेशजी के बड़े कान हमें सिखाते हैं कि जनता की आवाज सुनना ही सुशासन की पहली शर्त है।

उनकी छोटी आंखें एकाग्रता और सूक्ष्म दृष्टि का प्रतीक मानी जाती हैं। आज सूचना और विकल्पों की अधिकता के दौर में ध्यान भटकना आसान है। राष्ट्र के सामने भी अनेक चुनौतियां हैं। इसलिए लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए और ऊर्जा अनावश्यक विवादों में नहीं, राष्ट्र के निर्माण में लगनी चाहिए। विकसित भारत का लक्ष्य तभी सार्थक होगा जब व्यक्ति से लेकर शासन तक प्राथमिकताओं की स्पष्टता, कार्य में एकाग्रता और परिणाम के प्रति प्रतिबद्धता हो। गणेशजी की सूंड अत्यंत संवेदनशील होने के साथ शक्तिशाली भी है। वह सूक्ष्म वस्तु को भी संभाल सकती है और भारी कार्य भी कर सकती है। यह क्षमता हमें परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की प्रेरणा देती है। आज के भारत को भी यही लचीलापन चाहिए। तकनीक बदल रही है, रोजगार के स्वरूप बदल रहे हैं, वैश्विक अर्थव्यवस्था बदल रही है और पर्यावरणीय चुनौतियां बढ़ रही हैं। जो समाज परिवर्तन को समझकर अपनी क्षमता विकसित करेगा, वही भविष्य का नेतृत्व करेगा।

गणेशजी का लंबोदर भी गहरा जीवन-संदेश देता है। इसे विशाल हृदय, सहनशीलता और जीवन की विविधताओं को आत्मसात करने की क्षमता का प्रतीक माना जा सकता है। राष्ट्रनिर्माण में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन मनभेद विनाशकारी हो सकते हैं। भारत की शक्ति उसकी विविधता में है। भाषा, संस्कृति, परंपरा, विचार और जीवन-पद्धति की विविधता को संघर्ष का कारण नहीं, राष्ट्रीय शक्ति का आधार बनाना होगा। गणेशजी का व्यक्तित्व हमें समावेशी भारत की प्रेरणा देता है—ऐसा भारत जिसमें विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और कोई स्वयं को राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग महसूस न करे। गणेशजी का वाहन मूषक भी अत्यंत अर्थपूर्ण प्रतीक है। विशालकाय गजानन का वाहन एक छोटा-सा मूषक है। यह मानो अहंकार पर नियंत्रण और छोटे से छोटे तत्व के महत्व को स्वीकार करने का संदेश देता है। आधुनिक भारत में बड़ी अर्थव्यवस्थाओं और बड़ी परियोजनाओं के साथ छोटे उद्यमी, कारीगर, किसान, स्टार्टअप, स्थानीय व्यवसाय और सामान्य नागरिक भी विकास की धुरी हैं। विकसित भारत का अर्थ केवल बड़े भारत से नहीं, बल्कि हर व्यक्ति को अवसर देने वाले भारत से है। गणेशजी की चार भुजाएं कर्म, ज्ञान, विवेक और संतुलन के समन्वय का संदेश देती हैं। आज भारत को ज्ञान और कौशल से संपन्न युवा चाहिए, उद्यमशील नागरिक चाहिए और ऐसे संस्थान चाहिए जो नवाचार को प्रोत्साहित करें। केवल डिग्री नहीं, उपयोगी ज्ञान; केवल नौकरी नहीं, रोजगार सृजन; केवल उपभोग नहीं, उत्पादन—यही विकसित भारत की आधारभूमि बन सकती है। गणेशजी को विघ्नहर्ता कहा जाता है, लेकिन विघ्नों को समाप्त करने का वास्तविक अर्थ समस्याओं से पलायन नहीं, बल्कि उनका साहसपूर्वक सामना करना है। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, प्रदूषण और अंधविश्वास जैसे राष्ट्रीय विघ्न केवल कानूनों से नहीं, सामूहिक चेतना और नागरिक जिम्मेदारी से दूर होंगे। गणेशजी का साहस हमें बताता है कि कठिनाई जितनी बड़ी हो, संकल्प उससे बड़ा होना चाहिए। ऋद्धि और सिद्धि का गणेशजी से जुड़ाव भी विकास की व्यापक अवधारणा को स्पष्ट करता है। केवल धन-संपदा ऋद्धि नहीं और केवल उपलब्धि सिद्धि नहीं; दोनों का संतुलन आवश्यक है। भारत की आर्थिक समृद्धि के साथ ज्ञान, संस्कार, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की सिद्धि भी होनी चाहिए। तभी समृद्धि स्थायी और सार्थक बनेगी। शुभ और लाभ का संदेश भी यही है कि उपलब्धि तभी शुभ है जब वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के व्यापक हित में हो। गणेशजी को प्रथम पूज्य और बुद्धि के देवता के रूप में स्मरण करने की भारतीय परंपरा आज के भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। जब देश 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है, तब आवश्यकता केवल सरकारों के प्रयासों की नहीं, बल्कि विकसित सोच वाले नागरिकों की है। प्रत्येक भारतीय अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी, उत्कृष्टता, नवाचार, अनुशासन और राष्ट्रहित को प्राथमिकता दे, तो विकास का लक्ष्य जनआंदोलन बन सकता है। गणेश चतुर्थी इसलिए हमें केवल प्रतिमा स्थापित करने और उत्सव मनाने का अवसर न दे, बल्कि अपने भीतर गणेशत्व जगाने का संकल्प दे। बुद्धि में विशालता हो, दृष्टि में दूरदर्शिता हो, कानों में संवेदनशीलता हो, वाणी में मधुरता हो, कर्म में शक्ति हो, मन में धैर्य हो और व्यवहार में समावेशिता हो—यही गणेशजी की वास्तविक आराधना है। जब भारत का नागरिक अपने भीतर के विघ्नों—अज्ञान, आलस्य, अहंकार, स्वार्थ और संकीर्णता—पर विजय प्राप्त करेगा, तभी विकसित भारत का सपना साकार होगा। भगवान गणेश का संदेश अंततः यही है कि मंगल बाहर से नहीं आता, उसे अपने विचार, व्यवहार और कर्म से निर्मित करना पड़ता है। यदि गणेशजी की बुद्धि, विवेक, धैर्य, साहस, श्रवणशीलता, आत्मसंयम और समावेशी दृष्टि को राष्ट्रीय जीवन का हिस्सा बनाया जाए, तो भारत केवल आर्थिक रूप से विकसित राष्ट्र नहीं, बल्कि समृद्ध, संस्कारित, संवेदनशील, आत्मनिर्भर और विश्व को दिशा देने वाला आदर्श राष्ट्र बन सकता है। यही गणेश चतुर्थी की सबसे बड़ी राष्ट्रीय साधना और विकसित भारत 2047 के संकल्प की सार्थक परिणति होगी।

भाषाई साम्राज्यवाद बनाम व्यावहारिक यथार्थ: हिंदी दिवस की नई चुनौतियाँ और दक्षिण का दृष्टिकोण

अशोक भाटिया

हर साल चौदह सितंबर आते ही देश के प्रशासनिक और अकादमिक गलियारों में एक चिर-परिचित हलचल शुरू हो जाती है। हिंदी पखवाड़े के नाम पर दफ्तरों में फाइलों का रंग बदलने लगता है, भाषणों की पुरानी पेटियां खोल दी जाती हैं और 'राष्ट्रभाषा' के नाम पर वही घिसे-पिटे नारे दोहराए जाने लगते हैं जो पिछले सात दशकों से सुने जा रहे हैं। लेकिन समकालीन भारत के बदलते सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक यथार्थ के बीच अब समय आ गया है कि हम इस रस्मी औपचारिकता के आवरण को हटाकर उस कड़वे सच का सामना करें जिसे अक्सर सरकारी विज्ञापनों के शोर में दबा दिया जाता है। आज का भाषाई परिदृश्य केवल इस बात तक सीमित नहीं है कि हिंदी का विकास कितना हुआ, बल्कि यह इस बात का आत्मनिरीक्षण करने का समय है कि आखिर देश का एक बहुत बड़ा और आर्थिक रूप से समृद्ध हिस्सा, जिसे हम दक्षिण भारत कहते हैं, आज भी हिंदी को लेकर इतना आशंकित और प्रतिरोधी क्यों है। ऐतिहासिक रूप से इस प्रतिरोध को केवल 'राजनीतिक रूप से प्रेरित' या 'हिंदी विरोध' का नाम देकर खारिज किया जाता रहा है, जो कि न केवल एक सतही दृष्टिकोण है बल्कि दक्षिण भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और उनके तार्किक सरोकारों का अपमान भी है। हमें यह समझना होगा कि भाषा केवल संवाद का एक माध्यम भर नहीं होती, बल्कि वह किसी भी समाज की अस्मिता, उसके इतिहास, उसकी सोच और उसके अस्तित्व की संवाहक होती है। जब तक हम उत्तर और दक्षिण के बीच की इस भाषाई खाई को नीतिगत और मनोवैज्ञानिक स्तर पर नहीं समझेंगे, तब तक हर साल चौदह सितंबर को मनाया जाने वाला यह उत्सव देश की विविधता में एकता के सिद्धांत पर एक अनकहा प्रश्नचिह्न लगाता रहेगा।

दक्षिण भारत के राज्यों—विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश—में हिंदी को लेकर जो झिझक या प्रतिरोध दिखाई देता है, उसकी जड़ें उनके गौरवशाली इतिहास और भाषाई स्वाभिमान में समाहित हैं। उदाहरण के लिए, तमिल भाषा दुनिया की सबसे पुरानी जीवित भाषाओं में से एक है, जिसका अपना एक समृद्ध संगम साहित्य है जो संस्कृत या हिंदी से प्रभावित हुए बिना स्वतंत्र रूप से फला-फूला है। यही बात कन्नड़, तेलुगु और मलयालम पर भी लागू होती है जिनका अपना एक अलग व्याकरण, दर्शन और सांस्कृतिक परिवेश है। ऐसे में जब उत्तर भारत के राजनेताओं या केंद्र सरकार की नीतियों द्वारा यह संदेश दिया जाता है कि हिंदी ही भारत की असली पहचान है या हिंदी सीखे बिना कोई व्यक्ति 'सच्चा भारतीय' नहीं हो सकता, तो दक्षिण के समाज में एक स्वाभाविक आक्रोश का जन्म होता है। उन्हें लगता है कि उनकी भाषाई पहचान को दोयम दर्जे का बनाने की कोशिश की जा रही है। आजादी के बाद जब संविधान सभा में भाषा के प्रश्न पर बहस हो रही थी, तब भी दक्षिण के नेताओं ने स्पष्ट कर दिया था कि वे किसी भी ऐसी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेंगे जो उन पर जबरन कोई भाषा थोपे। यही कारण था कि तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने आश्वासन दिया था कि जब तक गैर-हिंदी भाषी राज्य चाहेंगे, तब तक अंग्रेजी एक सह-राजभाषा के रूप में बनी रहेगी। लेकिन हाल के वर्षों में, चाहे वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत त्रि-भाषा सूत्र का क्रियान्वयन हो, या केंद्रीय नौकरियों की परीक्षाओं में हिंदी को प्राथमिकता देने का मामला हो, दक्षिण को यह महसूस होने लगा है कि उस पुराने ऐतिहासिक वादे को धीरे-धीरे कमजोर किया जा रहा है। इसी 'भाषाई थोपने' या 'अधिग्रहण' के डर ने वहां के राजनीतिक और सामाजिक विमर्श को हमेशा सतर्क और आक्रामक बनाए रखा है।

इस सांस्कृतिक संघर्ष के समानांतर, आज के वैश्विक और पूंजीवादी दौर में एक बहुत बड़ा आर्थिक यथार्थ भी काम कर रहा है जो दक्षिण भारत के युवाओं के

हिन्दी दैनिक
उत्तरशक्ति
मार्गदर्शन

दृष्टिकोण को निर्धारित करता है। आज का युवा अत्यंत व्यावहारिक है और वह किसी भी भाषा को उसकी उपयोगिता और रोजगार की संभावनाओं के तराजू पर तौलता है। यदि हम दक्षिण भारत के आर्थिक मॉडल को देखें, तो वहां सूचना प्रौद्योगिकी, जैव-प्रौद्योगिकी, विनिर्माण और सेवा क्षेत्र का अभूतपूर्व विकास हुआ है। बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई और कोच्चि जैसे शहर आज वैश्विक अर्थव्यवस्था के केंद्र बन चुके हैं। इन शहरों में रहने वाले किसी भी नौजवान के लिए तरक्की की सीढ़ी अंग्रेजी भाषा से होकर गुजरती है, जो उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अवसरों से जोड़ती है। वहीं दूसरी ओर, उसका स्थानीय सामाजिक और व्यापारिक जीवन उसकी अपनी मातृभाषा में चलता है। ऐसे में उसके सामने यह एक बहुत बड़ा यक्ष प्रश्न खड़ा होता है कि वह अपने पाठ्यक्रम या जीवन में तीसरी भाषा के रूप में हिंदी को क्यों शामिल करे। क्या हिंदी सीखने से उसे कोई नया आर्थिक लाभ या रोजगार का अवसर मिलने वाला है। यथार्थ इसके बिल्कुल विपरीत है। आज उत्तर भारत के पिछड़े राज्यों से बड़े पैमाने पर श्रमिक और पेशेवर रोजगार की तलाश में दक्षिण के राज्यों की ओर पलायन कर रहे हैं। बाजार का यह नियम है कि जो व्यक्ति बेचने आता है या जिसे काम की जरूरत होती है, वह स्थानीय ग्राहक की भाषा सीखता है। इसलिए, दक्षिण के बाजारों में काम करने वाले उत्तर भारतीय प्रवासियों को वहां की स्थानीय भाषाएं सीखनी पड़ रही हैं, न कि दक्षिण के लोगों को हिंदी सीखने की कोई तात्कालिक आवश्यकता महसूस हो रही है। इस आर्थिक समीकरण ने हिंदी की उस कथित अनिवार्यता को पूरी तरह से अप्रासंगिक बना दिया है जिसे प्रशासनिक आदेशों के जरिए लागू करने की कोशिश की जाती है।

इसके अलावा, इस भाषाई विवाद के पीछे एक और गहरा और संवेदनशील राजनीतिक-वित्तीय आयाम है जो हाल के वर्षों में देश के संघीय ढांचे के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। दक्षिण भारत के राज्यों ने पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या नियंत्रण, साक्षरता, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के मानकों पर असाधारण प्रदर्शन किया है। लेकिन देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोकसभा सीटों का निर्धारण जनसंख्या के आधार पर होता है। आगामी वर्षों में होने वाले संभावित परिसीमन को लेकर दक्षिण के राज्यों में यह गंभीर चिंता है कि अपनी जनसंख्या को नियंत्रित करने और विकास करने की उन्हें एक राजनीतिक सजा मिलने वाली है, क्योंकि उत्तर भारत के राज्य अपनी बेकाबू आबादी के कारण संसद में अधिक सीटें पा जाएंगे और दक्षिण का राजनीतिक प्रतिनिधित्व कम हो जाएगा। इसी तरह, केंद्रीय करों के वितरण में भी यह देखा गया है कि दक्षिण के राज्यों द्वारा कमाए गए राजस्व का एक बड़ा हिस्सा उत्तर के हिंदी भाषी राज्यों के विकास पर खर्च किया जा रहा है। इस राजनीतिक और वित्तीय असंतुलन के माहौल में, जब केंद्र की ओर से हिंदी को बढ़ावा देने या उसे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाली एकमात्र भाषा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो दक्षिण के राज्यों को लगता है कि उनके अधिकारों, उनकी स्वायत्तता और उनकी भाषाई समानता की जानबूझकर उपेक्षा की जा रही है। यह डर केवल भाषा का नहीं है, बल्कि यह देश के संघीय ढांचे में अपनी राजनीतिक प्रासंगिकता को बचाए रखने का एक अस्तित्वगत संघर्ष है।

लेकिन इस पूरे परिदृश्य का सबसे अनूठा और विरोधाभासी पहलू यह है कि जहां एक तरफ राजनीतिक, प्रशासनिक और नीतिगत स्तर पर हिंदी को थोपे जाने का कड़ा विरोध होता है, वहीं दूसरी तरफ दक्षिण भारत का 'बाजार' और वहां की आम जनता बिना किसी दबाव के, अपनी मर्जी से हिंदी को अपना रही है। यह इस बात का जीवंत प्रमाण है कि 'थोपनी' हमेशा हारती है लेकिन 'बाजार' हमेशा जीतता है। आज बेंगलुरु के आईटी पार्कों, हैदराबाद के वित्तीय जिलों या चेन्नई के बहुराष्ट्रीय कार्यालयों में उत्तर और दक्षिण भारत के पेशेवर एक साथ काम कर रहे हैं, जिससे एक सहज और मिश्रित संस्कृति का जन्म हो रहा है। इस सह-अस्तित्व ने आम बोलचाल की व्यावहारिक हिंदी को दक्षिण के महानगरों में एक स्वाभाविक स्थान दे दिया है। इसके साथ ही, डिजिटल मनोरंजन, ओटीटी प्लेटफॉर्म और सिनेमा की दुनिया ने भाषाई सीमाओं को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया है। हाल के वर्षों में 'पैन-इंडिया' सिनेमा के उदय ने, जिसमें दक्षिण की फिल्मों को हिंदी पट्टी में रिकॉर्डतोड़ कामयाबी मिली और हिंदी की फिल्मों तथा वेब सीरीज को दक्षिण के दर्शकों ने चाव से देखा, यह साबित कर दिया है कि कला और संस्कृति किसी भौगोलिक या भाषाई बंधन को नहीं मानतीं। दक्षिण का युवा आज हिंदी गाने सुन रहा है, हिंदी शो देख रहा है, लेकिन वह ऐसा अपनी पसंद से कर रहा है, किसी कानून के डर से नहीं। जब भाषा एक विकल्प बनकर, एक पुल बनकर आती है, तो उसका स्वागत बाहें फैलाकर किया जाता है, लेकिन जब वही भाषा एक आदेश बनकर, एक दीवार बनकर खड़ी होती है, तो उसका विरोध होना निश्चित है।

यदि हमें वास्तव में हिंदी को देश की एक गौरवशाली संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करना है, तो हमें 'हिंदी के नाम पर राजनीति' करने की प्रवृत्ति को छोड़ना होगा। हिंदी का विकास किसी अन्य भारतीय भाषा को दबाकर, उसे मिटाकर या उसे कमतर आंककर कभी नहीं हो सकता। भारत कोई एकरूपी राष्ट्र नहीं है, बल्कि यह विभिन्न संस्कृतियों, इतिहासों और भाषाओं का एक बेहद खूबसूरत और संवेदनशील गुलदस्ता है। इस गुलदस्ते की खूबसूरती तभी तक बनी रह सकती है जब तक हर फूल को खिलने की पूरी आजादी और सम्मान मिले। हिंदी दिवस मनाने का तरीका अब केवल हिंदी भाषी राज्यों तक सीमित रहने या गैर-हिंदी भाषियों को उपदेश देने का नहीं होना चाहिए। सच्ची प्रगति तब होगी जब उत्तर भारत के लोग, वहां के शैक्षणिक संस्थान और वहां का समाज भी दक्षिण की समृद्ध भाषाओं, जैसे तमिल, तेलुगु, कन्नड़ या मलयालम को सीखने की दिशा में कदम बढ़ाएगा। जब तक यह संवाद और सम्मान एकतरफा रहेगा, तब तक भाषाई तनाव की यह आंच सुलगती रहेगी। केंद्रीय स्तर पर भी नीति-नियंताओं को यह समझना होगा कि भारत को एकजुट रखने वाली शक्ति कोई एक भाषा नहीं बल्कि हमारा साझा लोकतांत्रिक मूल्य और एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना है। हिंदी को एक शासक की भाषा के रूप में नहीं, बल्कि एक सखी के रूप में आगे बढ़ना होगा जो सभी भारतीय भाषाओं का हाथ थामकर चल सके। तभी हम एक अखंड, समरस और सच्चे अर्थों में विविधता से परिपूर्ण भारत का निर्माण कर पाएंगे, जहाँ हर नागरिक अपनी मातृभाषा में बोलते हुए भी गर्व से भारतीय कहलाने का हकदार होगा।

हिंदी दिवस 2026 : भाषा से भविष्य तक - ज्ञान, तकनीक और रोजगार की नई दिशा

हिंदी को केवल बोलने-पढ़ने की भाषा नहीं, भविष्य बनाने की भाषा बनाना होगा

-प्रो. डॉ. दयानंद तिवारी

जिस भाषा में माँ की लोरी है, उसी भाषा में विज्ञान भी हो। जिस भाषा में मन की अभिव्यक्ति है, उसी भाषा में रोजगार की पहचान भी हो।

हर वर्ष 14 सितंबर को हम हिंदी दिवस मनाते हैं। कार्यालय सजते हैं, भाषण होते हैं, प्रतियोगिताएँ आयोजित होती हैं, हिंदी सप्ताह और हिंदी पखवाड़े के कार्यक्रम चलते हैं। यह सब आवश्यक है, किंतु आज प्रश्न इससे आगे का है क्या हिंदी का उत्सव केवल हिंदी दिवस तक सीमित रहेगा, या हिंदी भारत के युवाओं के भविष्य, तकनीक, ज्ञान और रोजगार की भाषा भी बनेगी?

वर्ष 2026 का हिंदी दिवस हमें इसी प्रश्न के सामने खड़ा करता है।

हिंदी का इतिहास गौरवशाली है, उसका साहित्य विराट है, उसका जनाधार व्यापक है; किंतु किसी भाषा की वास्तविक शक्ति केवल उसके अतीत से नहीं, उसके भविष्य की संभावनाओं से निर्धारित होती है। इसलिए अब हिंदी की चर्चा कबीर, तुलसी, सूर, प्रेमचंद, निराला, महादेवी और दिनकर तक पहुँचकर रुकनी नहीं चाहिए। उसी हिंदी को आगे बढ़कर कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल बैंकिंग, स्टार्टअप, मीडिया, कानून, चिकित्सा और आधुनिक रोजगारों की भाषा भी बनना होगा।

हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति है उसकी सहजता

हिंदी की शक्ति उसकी जनस्वीकार्यता और सहजता में है। व्यक्ति जिस भाषा में सोचता है, उसी भाषा में ज्ञान को सबसे स्वाभाविक रूप से ग्रहण करता है। यदि बैंक की योजना, सरकारी सेवा, स्वास्थ्य संबंधी सूचना, तकनीकी प्रशिक्षण और रोजगार संबंधी मार्गदर्शन सरल हिंदी में उपलब्ध हो, तो ज्ञान कुछ लोगों तक सीमित न रहकर समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँच सकता है। इसलिए हिंदी को कठिन शब्दावली का प्रदर्शन नहीं, सरल संवाद का माध्यम बनाना होगा।

सरल हिंदी कमजोर हिंदी नहीं होती; सरल हिंदी वह समर्थ हिंदी है जो सीधे जनता के मन तक पहुँचती है।

देवनागरी और हिंदी का वैज्ञानिक स्वरूप :-

हिंदी की देवनागरी लिपि की एक विशेषता उसकी ध्वनि और वर्ण के बीच अपेक्षाकृत स्पष्ट संबंध है। स्वर, व्यंजन और उनके उच्चारण का व्यवस्थित क्रम भाषा-शिक्षण को सहज बनाता है। डिजिटल युग में यूनिकोड, वॉयस-टू-टेक्स्ट, टेक्स्ट-टू-स्पीच और मशीन अनुवाद जैसी तकनीकों ने देवनागरी को कंप्यूटर और मोबाइल की दुनिया में नई शक्ति दी है।

आज व्यक्ति हिंदी बोलकर संदेश लिख सकता है, हिंदी में इंटरनेट खोज सकता है और अकसे हिंदी में संवाद कर सकता है। यही परिवर्तन आने वाले वर्षों में हिंदी के लिए विशाल रोजगार बाजार का आधार बन सकता है।

संविधान से भविष्य तक :-

संविधान के अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी का प्रावधान है। अनुच्छेद 351 हिंदी के प्रसार और विकास की व्यापक भावना प्रस्तुत करता है, ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बने। परंतु हिंदी का विकास किसी भारतीय भाषा की कीमत पर नहीं होना चाहिए।

भारतीय भाषाएँ हमारी जड़ें हैं और हिंदी उनके बीच संवाद का सेतु है।

मराठी, तमिल, तेलुगु, गुजराती, बंगाली, कन्नड़, पंजाबी, मलयालम, असमिया, उड़िया, संस्कृत सहित भारत की प्रत्येक भाषा हमारी राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा है। हिंदी की शक्ति इन्हें साथ लेकर चलने में है।

हिंदी दिवस अब रोजगार का द्वार भी बने

आज हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थी के सामने केवल शिक्षक, पत्रकार या सरकारी कर्मचारी बनने के विकल्प नहीं हैं। डिजिटल अर्थव्यवस्था ने भाषा से जुड़े रोजगारों की पूरी दुनिया बदल दी है।

आज का युवा हिंदी के साथ तकनीकी कौशल जोड़कर अकभाषा विशेषज्ञ, डिजिटल कंटेंट राइटर, कॉपीराइटर, तकनीकी अनुवादक, भाषा-डेटा विशेषज्ञ, पटकथा लेखक, सबटाइटल विशेषज्ञ, पॉडकास्ट लेखक, सोशल मीडिया मैनेजर, हिंदी व राइटर, वॉयस आर्टिस्ट, डिजिटल संपादक, प्रूफरीडर, कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन विशेषज्ञ और भाषा-आधारित उद्यमी बन सकता है।

यही वह परिवर्तन है जिसे विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को समझना होगा।

अब पाठ्यक्रम केवल हिंदी **साहित्य तक सीमित न रहें; उनमें जोड़ें :–**

हिंदी + अक
हिंदी + डिजिटल मीडिया
हिंदी + अनुवाद प्रौद्योगिकी
हिंदी + पत्रकारिता
हिंदी+फिल्म एवं पटकथा लेखन
हिंदी + कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन
हिंदी + डिजिटल मार्केटिंग

जैसे रोजगारोन्मुख संयोजन विकसित होने चाहिए।

विद्यार्थी अपना करियर कैसे बनाए?

हिंदी का विद्यार्थी सबसे पहले अच्छी भाषा, व्याकरण और लेखन पर पकड़ बनाए। इसके बाद उसे हिंदी टाइपिंग, कंप्यूटर, अक उपकरण, सोशल मीडिया, वीडियो-स्क्रिप्ट, अनुवाद और डिजिटल कंटेंट का प्रशिक्षण लेना चाहिए।

केवल डिग्री अब पर्याप्त नहीं है। भाषा के साथ कौशल आवश्यक है।

विद्यार्थी यदि हिंदी में अच्छा लिख सकता है, अंग्रेजी अथवा किसी अन्य भारतीय भाषा को समझता है और डिजिटल तकनीक का उपयोग जानता है, तो उसके सामने अवसर कई गुना बढ़ जाते हैं।

अपना ब्लॉग बनाइए, लेख लिखिए, पॉडकास्ट शुरू कीजिए, अनुवाद कीजिए, डिजिटल पोर्टफोलियो तैयार कीजिए। छोटी शुरूआत ही भविष्य के बड़े करियर की नींव बन सकती है।

अक अब हिंदी के सामने संकट नहीं, संभावना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को भाषा सिखाने के लिए शब्दों, वाक्यों, आवाजों, संदर्भों, मुहावरों और सांस्कृतिक अर्थों की आवश्यकता होती है। हिंदी तथा उसकी विविध बोलियों के पास विशाल भाषायी संपदा है। यदि हम गुणवत्तापूर्ण हिंदी डेटा तैयार करें, अधिक पुस्तकों और ज्ञान सामग्री का डिजिटलीकरण करें तथा हिंदी में अक मॉडल, वॉयस असिस्टेंट, चैटबॉट और मशीन अनुवाद विकसित करें, तो आने वाला समय हिंदी भाषियों के लिए अभूतपूर्व रोजगार लेकर आ सकता है।

जिस भाषा का डिजिटल संसार जितना समृद्ध होगा, भविष्य की तकनीक में उसकी उपस्थिति उतनी ही प्रभावशाली होगी।

हिंदी सप्ताह—प्रतियोगिता से प्रशिक्षण तक

हिंदी सप्ताह और हिंदी पखवाड़े की अवधारणा को अब और उपयोगी बनाया जाना चाहिए। कविता, निबंध और भाषण प्रतियोगिताएँ रहें, किंतु इनके साथ हिंदी डिजिटल लेखन, अक प्रयोग, वॉयस टेक्नोलॉजी, तकनीकी अनुवाद, बैंकिंग भाषा, कंटेंट निर्माण और रोजगार प्रशिक्षण भी आयोजित हों। हिंदी दिवस की वास्तविक सफलता तब होगी जब कार्यालय में हिंदी 14 सितंबर को ही नहीं, पूरे वर्ष दिखाई दे। पंद्रह दिन का उत्सव नहीं बल्कि 365 दिन का व्यवहार चाहिए।

विश्वभाषा बनने की दिशा

आज भारतीय सिनेमा, योग, आयुर्वेद, अध्यात्म, संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति विश्व का आकर्षण बढ़ा है। डिजिटल माध्यम ने भाषाओं की सीमाएँ भी तोड़ दी हैं। हिंदी साहित्य का अधिकाधिक विश्व भाषाओं में अनुवाद हो, भारतीय ज्ञान-विज्ञान की सामग्री हिंदी में तैयार हो, विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन का विस्तार हो और इंटरनेट पर उच्चस्तरीय हिंदी सामग्री बढ़े—तो हिंदी का वैश्विक प्रभाव स्वाभाविक रूप से बढ़ेगा।

हिंदी को विश्वभाषा बनाने का मार्ग केवल भावनात्मक आग्रह से नहीं, ज्ञान, तकनीक, गुणवत्ता और उपयोगिता से निकलेगा।

आज हिंदी दिवस पर हमें केवल यह नहीं कहना है कि हिंदी महान है। हमें ऐसा वातावरण बनाना है कि युवा स्वयं अनुभव करे कि हिंदी में भी भविष्य महान है।

हमारा संकल्प हो कि : –

हिंदी को केवल सम्मान नहीं—अवसर दें।
हिंदी को केवल साहित्य नहीं—विज्ञान से जोड़ें।
हिंदी को केवल राजभाषा नहीं—रोजगार की भाषा बनाएँ।
हिंदी को केवल कंप्यूटर पर लिखें नहीं—अक को हिंदी सिखाएँ।
और हिंदी दिवस को केवल समारोह नहीं—युवा भविष्य का संकल्प बनाएँ।

अंततः मैं कहूँगा कि : –

हिंदी जब ज्ञान की भाषा होगी,
तभी नई पहचान की भाषा होगी।
हिंदी से जब रोजगार मिलेगा,
तभी युवा का विश्वास खिलेगा।
कलम से लेकर कृत्रिम बुद्धि तक,
हिंदी अपनी राह बनाए,
भारत की माटी की यह भाषा,
विश्व-पटल पर मान बढ़ाए।

जिस दिन भारत का युवा गर्व से कहेगा कि -

हिंदी मेरी मातृ-अनुभूति ही नहीं, मेरा आधुनिक ज्ञान है,

हिंदी मेरी संस्कृति ही नहीं, मेरी तकनीकी पहचान है,

हिंदी केवल मेरी भाषा नहीं, मेरे करियर, मेरे रोजगार और मेरे भविष्य की भाषा है। उस दिन हिंदी दिवस केवल एक तिथि नहीं रहेगा। वह विकसित भारत की भाषायी आत्मनिर्भरता का उत्सव बन जाएगा।

हिंदी भाषा पर अवलंबित वैश्विक अर्थतंत्र

संजीव ठाकुर

हिंदी बनी व्यावसायिक भाषा।

डॉ राजेंद्र प्रसाद ने कहा है कि हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द या भाषा का तिरस्कार नहीं किया। और यही तथ्य हिंदी भाषा के गौरव को अत्यंत विशाल तथा विराट बनाती है । हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति सनातन तथा संस्कारों की सारगर्भित भाषा है।

हिंदी भाषा भारत में ही 141 करोड़ लोगों की भाषा बन चुकी है। देश के लिए जनसंख्या जरूर समस्या के रूप में देखी जा सकती है पर अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिए यह एक बड़े बाजार का खजाना ही साबित हो रही है । भारत अब एक बड़ा अंतरराष्ट्रीय उपभोक्ता बाजार बन चुका है और और भारतीय उत्पाद को बेचने के लिए हिंदी भाषा एक सशक्त माध्यम बन चुकी है। भारत में न जाने कितनी अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक संस्थाएं अपने उत्पाद बेचने के लिए आतुर रहती हैं और यही एक बड़ा कारण है कि उन्हें अपने विज्ञापन तथा माल बेचने के लिए भारतीय उपभोक्ताओं को आकर्षित करने हिंदी में विज्ञापन में बेची जाने वाली वस्तुओं की समस्त जानकारी रखनी होती हैं ।यह उनकी व्यावसायिक मजबूरी ही है कि भारत तथा विदेशों में रहने वाले तमाम हिंदुस्तानियों के लिए हिंदी भाषा के माध्यम से प्रचार प्रसार तथा विज्ञापन करती रहें तब जाकर उनका निर्मित उत्पाद विक्रय के लिए बाजार में आ सकेगा। वर्तमान में हिंदी को वैश्विक स्तर पर उपभोक्तावाद से जोड़ा गया है। और बीच-बीच में हिंदी के मध्य उर्दू और अंग्रेजी ने अपनी जगह बनाई है। आज स्थिति यह है कि हिंदुस्तान में ही हिंदी से ज्यादा अंग्रेजी के कई शब्द मिलाकर हिग्लिश भाषा बोली जाती है। न्यूज चैनल में न्यूज एंकर विशुद्ध हिंदी की जगह हिग्लिश ही बोलकर अपनी इतिश्री कर लेते हैं। और तो और अब हिंदी के बड़े साहित्यकार भी हिंदी में अंग्रेजी तथा उर्दू के शब्द मिलाकर लिख रहे हैं, बोल रहे हैं, और पढ़ रहे हैं। विडंबना यह है कि भारत में 141 करोड़ उपभोक्ता की उपस्थिति में विशुद्ध हिंदी का प्रयोग करना थोड़ा कठिन हो जाता है ।जैसे हम टी,वी, को दूरदर्शन नहीं कहते, इंटरनेट को इंटरनेट ही लिखा जाता है, अंतरजाल नहीं लिखा जाता ।यह जितनी अंग्रेजी की शब्दावली हिंदी में जुड़ी हुई है, ाह संचार माध्यम टी,वी व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, इंटरनेट सीधे-सीधे उपभोक्ताओं के बाजार वाद के कारण जुड़े हुए हैं। हिंदुस्तान में लगभग 141 करोड़ उपभोक्ता निवास करते हैं, और उन तक पहुंचने के लिए हिंदी का प्रयोग अंग्रेजी तथा उर्दू की मिलावट के साथ किया जाता है। वैश्विक स्तर पर भी देखा जाए तो हिंदुस्तानी मूल के लोग श्रीलंका,मॉरीशस,फिजी, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया,न्यू जीलैंड, साउथ अफ्रीका में फैले हुए हैं। ऐसे में हिंदी का वैश्विक विस्तार अपने आप हिंदी भारतीय अप्रवासी, प्रवासी भारतीय लोगों के माध्यम से होने लगता है ।फिर अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, फ्रॉस, इटली, जापान,चाइना इनके उत्पादक को भारत के उपभोक्ताओं के बीच बेचने के लिए उन्हें हिंदी की आवश्यकता होती है, भारत एक शक्तिशाली उपभोक्ता बाजार है। एक साथ एक ही जगह इतने ग्राहक मिलना किसी अन्य देश में असंभव है। इन परिस्थितियों में विश्व का हर देश अपने बनाए गए उत्पादन का बाजार खोजने भारत की ओर खिंचा चलाआता है। और हिंदी को माध्यम बनाकर वह अपना माल बेचना शुरू करता है। और इसके लिए टी,वी, इंटरनेट, कंप्यूटर,व्हाट्सएप तथा फेसबुक में हिंदी में विज्ञापन देकर उसका प्रचार प्रसार करता है। विज्ञापनों में हिंदी का व्यापक रूप से प्रचार और प्रसार वैश्विक स्तर पर होने लगा है।

टेमघर में गणेश विसर्जन घाट का लोकार्पण, 3 किमी पैदल चलने से मिलेगी राहत

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी के टेमघर गांव स्थित गुरुचरण भूमि पर स्थानीय नगरसेवक बालाराम चौधरी के प्रयास से बनाए गए गणेश विसर्जन हौद एवं घाट का शनिवार शाम लोकार्पण किया गया। शिवसेना गटनेता मनोज काटेकर और पूर्व शिक्षा मंडल सभापति सुंदर नाईक के हाथों हौद में जलार्पण कर इसका शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर पूर्व नगरसेवक दीन मोहम्मद खान, आरिफ तांबोली, पूर्व नगरसेविका बेबीताई चौधरी, नगरसेवक रोहित चौधरी, गणेश घाट अध्यक्ष जनार्दन चौधरी, रोहिदास चौधरी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे। इस अवसर पर मनोज काटेकर ने कहा कि उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे द्वारा टेमघर गांव के विकास के लिए पर्याप्त निधि उपलब्ध कराए जाने से गांव का कायाकल्प होगा। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों का दुरुपयोग न हो, इसकी जिम्मेदारी अब ग्रामीणों की है। नगरसेवक बालाराम चौधरी द्वारा किए जा रहे कार्यों की भी उन्होंने सराहना की। नगरसेवक बालाराम चौधरी ने बताया कि टेमघर में ग्राम पंचायत के स्वामित्व वाली करीब साढ़े पांच एकड़ गुरुचरण भूमि पर पिछले कुछ वर्षों से अतिक्रमण था। उन्होंने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से मुलाकात कर अतिक्रमण हटाने और भूमि का सामाजिक उपयोग करने की मांग की थी। इसके बाद अतिक्रमण हटाने के आदेश दिए गए तथा गणेश विसर्जन हौद एवं घाट के साथ कबड्डी मैदान, खुले मंच, क्रीड़ांगण और समाजगृह के निर्माण के लिए करीब साढ़े पांच करोड़ रुपये की निधि उपलब्ध कराई गई।

गांव में तालाब नहीं होने के कारण गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए ग्रामीणों को करीब तीन किलोमीटर दूर भादवड़ गांव जाना पड़ता था। अब टेमघर में ही विसर्जन हौद एवं घाट उपलब्ध होने से गणेशभक्तों को हर वर्ष होने वाली तीन किलोमीटर पैदल चलने से राहत मिलेगी। नगरसेवक रोहित चौधरी ने कहा कि भविष्य में भी उपमुख्यमंत्री से अतिरिक्त निधि प्राप्त कर टेमघर के विकास को गति देने का प्रयास किया जाएगा।

हिंदी दिवस पर खड़ी बोली के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र को किया नमन

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिले के बोईसर नगर स्थिति जयश्री अपार्टमेंट में राष्ट्रीय सेवाभावी संगठन नोइंग सिटीजन्स नीड़ क्लब केसीएन क्लब द्वारा 9 सितम्बर को हिंदी साहित्य व खड़ी भाषा के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र को नमन करते हुए कवि सम्मेलन व हिंदी साहित्य पर विशेष चर्चा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता केसीएन क्लब निर्झरिणी के राष्ट्रीय संरक्षक कवि कौशल श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम में हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत एमआईडीसी उपअभियन्ता अविनाश गजानन सँखे , एमएसईबी के उप कार्यकारी अभियन्ता प्रभुचरन सी चौधरी, बोईसर ग्राम पंचायत के उत्कृष्ट लिपिक दीपक बालकृष्ण मोरे , वरिष्ठ समाजसेवी नीलेश अनन्त राउत समाजसेवी सुभाषचन्द्र दुबे को विशिष्ट सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ समाजसेवी स्वामीनाथ पांडेय व विशिष्ट अतिथि के रुप में समाजसेवी सुभाष चन्द्र दुबे व पूर्व शिक्षक माणिकराव कोकने उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन केसीएन क्लब निर्झरिणी जिलाध्यक्ष नवरत्न मिश्र अर्पित ने किया। कार्यक्रम में संगठन की साहित्यिक उपशाखा निर्झरिणी की 154वीं मासिक काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें हिंदी विषय पर कवि कौशल कुमार श्रीवास्तव, कवि शेखर तिवारी, कवि बसन्त चौहान, कवि सम्पत उजाला कवि नवरत्न मिश्र अर्पित कवि वरुण मिश्र सहित साहित्यकारों ने अपनी बेहतरीन रचनाओं से सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में केसीएन क्लब युवा मोर्चा सचिव चन्दन झा ,मनीष श्रीवास्तव, गोपाल शर्मा संजय भानुशाली, ओपी सिंह, संजय यादव, विनोद तिवारी प्रदीप पाण्डेय, नागेश्वर दास आस्मित नारायण, राकेश शर्मा, बैजनाथ महतो धनन्जय, यादव मनीष यादव सहित अन्य अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत मे केसीएन क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दन मिश्र त्यागी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

एम्पीयर की अल्टीमेट एंड्योरेंस राइड ने पटना में अपना पहला पड़ाव पूरा किया

मुंबई/पटना। एम्पीयर की अल्टीमेट एंड्योरेंस राइड - जो एम्पीयर मैग्नस GMax पर अरुणाचल प्रदेश के डोंग (सनराईस पॉइंट) से गुजरात के गुहार मोती (सनसैट पॉइंट) तक लगभग 4,000 किलोमीटर की यात्रा तय कर रही है - ने पटना में अपना पहला बड़ा पड़ाव पूरा किया। इस दौरान ओडोमीटर ने लगभग 1,800 किलोमीटर की दूरी तय कर ली थी। वीकेंड ऑन व्हील्स के गिरीश सेठ द्वारा चलाई जा रही यह 15-दिन की यात्रा ऊंचे पहाड़ी रास्तों, हाईवे, शहरी इलाकों, गर्मी, उमस और मुश्किल रास्तों से होकर गुजर रही है, और रास्ते में हर किलोमीटर, चार्ज और रीडिंग को रिकॉर्ड किया जा रहा है।

पटना में, इस यात्रा का एक पड़ाव इलेक्ट्रा एम्पीयर डीलरशिप पर हुआ, जहाँ एम्पीयर सर्कल कम्युनिटी ने अल्टीमेट एंड्योरेंस राइड का स्वागत किया। राइडरों, ग्राहकों और डीलर पार्टनर्स ने यात्रा करने वाली टीम के साथ बातचीत की, जो बिहार में एम्पीयर कम्युनिटी की मजबूती को दिखाता है; यहाँ ब्रांड 19 फीसदी मार्केट शेयर बनाता है।

लायंस क्लब ऑफ सफाले की ओर से गुणवंत शिक्षक एवं लायंस गौरव पुरस्कार समारोह उत्साहपूर्वक संपन्न

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। शिक्षक दिवस के अवसर पर लायंस क्लब ऑफ सफाले की ओर से आदर्श शिक्षिका स्व. प्रणिता प्रविण पाटील की पवित्र स्मृति में लायंस गुणवंत शिक्षक पुरस्कार-2026 तथा आदर्श व्यक्तित्व स्व. प्रभाकर वामन वर्तक की स्मृति में लायंस गौरव पुरस्कार-2026 प्रदान किये गये। शनिवार 12 सितंबर 2026 को सफाले पूर्व स्थित देवभूमि सभागृह में आयोजित भव्य सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह में शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली विभूतियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता लायंस क्लब ऑफ सफाले के अध्यक्ष लायन जतिन कदम ने की। प्रमुख अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध समाचार वाचिका एवं वरिष्ठ पत्रकार अनुपमा खानविलकर उपस्थित थीं। वहीं सम्माननीय अतिथियों में लायन प्रशांत पाटील, पास्ट डिस्ट्रिक्ट गवर्नर तथा पास्ट डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डॉ. दीपक चौधरी शामिल रहे। विशेष अतिथि के रूप में लियो राज कपाड़िया, डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट उपस्थित थे। अपने संबोधन में अनुपमा खानविलकर ने कहा कि पत्रकारिता के क्षेत्र में आने के लिए उन्हें अपने शिक्षकों से प्रेरणा मिली। उन्होंने पालघर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं को मीडिया के माध्यम से सामने लाकर उनके समाधान का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि शिक्षक समाज का आईना होते हैं। आज शिक्षकों को मतदाता सूची, जनगणना और विभिन्न सर्वेक्षण जैसे अतिरिक्त कार्यों के दौरान अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद वे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर

प्रयासरत रहते हैं। ऐसे शिक्षकों के कार्यों की लायंस क्लब जैसी संस्थाओं द्वारा सराहना व सम्मान किया जाना प्रेरणादायी है। कार्यक्रम के अध्यक्ष जतिन कदम ने कहा कि समाज के प्रति अपने दायित्व को निभाने के उद्देश्य से लायंस क्लब के माध्यम से विभिन्न जनसेवी कार्य किये जा रहे हैं। इनमें स्वास्थ्य जांच शिविर, शैक्षणिक सहायता, वृक्षारोपण, वनबंधारे निर्माण, कैंसर पीड़ितों की सहायता सहित अनेक सामाजिक उपक्रम शामिल हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षकों तथा विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों का सम्मान करना लायंस क्लब अपना कर्तव्य मानता है। पर्यावरण एवं जलसंधारण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले डॉ. दीपक चौधरी का विशेष सम्मान किया गया। उन्होंने अब तक 164 चेकडैम का निर्माण कर जलसंधारण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस अवसर पर उन्होंने सफाले लायंस क्लब के सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए शुभकामनाएं दीं। डॉ. प्रशांत पाटील ने भी उपक्रमशील शिक्षकों का अभिनंदन करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं। पुरस्काराथीं किशोर डोके ने इस अवसर पर बाप शीर्षक कविता प्रस्तुत की, जिससे उपस्थित लोगों की आंखें नम हो गईं। कार्यक्रम के दौरान लियो क्लब के नये पिन का उद्घाटन किया गया। साथ ही सैल्यूट बियॉन्ड द फ्लैग उपक्रम में सहभागी विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। कार्यक्रम का प्रास्ताविक सेक्रेटरी लायन कुंदन राऊत ने किया। पुरस्कारों की पृष्ठभूमि लायन प्रमोद पाटील ने प्रस्तुत की। संचालन प्रतिभा कदम ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन लायन संदेश पाटील ने किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में सेक्रेटरी लायन कुंदन राऊत, ट्रेजरर लायन निकेश वर्तक, फर्स्ट वाइस प्रेसिडेंट लायन संदेश पाटील, प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर लायन उल्हास सोगले तथा डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन (एज्युकेशन) लायन प्रमोद पाटील का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों को लायंस गौरव पुरस्कारझ2026 से सम्मानित किया गया। सामाजिक कार्य के लिए पांडुरंग झु?या वर्तक (कोरे), पर्यावरण के लिए पास्ट डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन दीपक सखाराम चौधरी (मथाणे), सहकारिता के लिए पुरुषोत्तम ठकसेन पाटील (रामबाग माकुणसार), चिकित्सा क्षेत्र के लिए डॉ. अतुल मार्तंड पुरंदरे (कोरे), कृषि क्षेत्र के लिए उमेश शंकर पाटील (मथाणे), कला क्षेत्र के लिए धनेश बलीराम गावड (टेंभीखोडावे), महिला सशक्तिकरण के लिए हर्षदा अल्पेश घरत (विराथन), साहित्य के लिए महेंद्र रामचंद्र पाटील (मायखोप), सशस्त्र वदीर्धारी सेवा के लिए हर्षल अरुण पाटील (सफाले) तथा खेल क्षेत्र के लिए ऋणीता विशाल पाटील (सफाले) को सम्मानित किया गया।

घाटकोपर में आधुनिक एवं सर्वसुविधायुक्त श्मशान भूमि का भूमिपूजन संपन्न

मुंबई (उत्तरशक्ति)। घाटकोपर श्मशानभूमि कमिटी तथा घाटकोपर जनसंकल्प समिति के संयुक्त तत्वावधान में घाटकोपर में बनने वाली नई, आधुनिक एवं सर्वसुविधायुक्त श्मशानभूमि का भूमिपूजन समारोह शनिवार, 12 सितंबर को उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय विधायक पराग शाह सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। समारोह में सोमैया ट्रस्ट के समीर सोमैया, नगरसेविका राखीताई जाधव, श्रीमती निर्मिती कानडे, नगरसेवक धर्मेश गिरी एवं प्रवीण छेड़ा, पूर्व नगरसेवक भालचंद्र शिरसाट, जीतूभाई मेहता तथा जीतूभाई भानुशाली सहित घाटकोपर क्षेत्र के अनेक प्रतिष्ठित नागरिकों ने उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर विधायक पराग शाह ने कहा कि घाटकोपर में बनने वाली यह आधुनिक एवं सर्वसुविधायुक्त श्मशानभूमि क्षेत्रवासियों के लिए अत्यंत आवश्यक सुविधा साबित होगी। इससे नागरिकों को बेहतर एवं सुविधाजनक व्यवस्था उपलब्ध होगी।

लालपरी सजी, कोंकण की ओर मुड़े चाकरमानियों के कदम

◆परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक की पहल से मीरा-भायंदर के श्रद्धालुओं के लिए मुफ्त बस सेवा; पूजा सामग्री का उपहार देकर बढ़ाया गणेशोत्सव का उत्साह

मीरा-भायंदर (उत्तरशक्ति)। गणपति बप्पा के आगमन के साथ ही मुंबई और आसपास के शहरों में रहने वाले चाकरमानियों का मन अपने गांव और कोंकण की धरती की ओर खिंचने लगता है। इसी भावनात्मक जुड़ाव को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र के परिवहन मंत्री एवं धाराशिव जिले के पालकमंत्री प्रताप सरनाईक की पहल पर मीरा-भायंदर के चाकरमानियों के लिए कोंकण, सातारा और कोल्हापुर तक मुफ्त बस सेवा उपलब्ध कराई गई। शनिवार, 12 सितंबर को रात 8 बजे मीरा रोड पूर्व स्थित जेपी नॉर्थ परिसर से इस विशेष बस सेवा का भव्य शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र राज्य सड़क परिवहन निगम (एसटी) की 100 से अधिक लालपरी बसें गणपति बप्पा मोरया के जयघोष और ताल-मृदंग की गूंज के बीच कोंकण, सातारा और कोल्हापुर की दिशा में रवाना हुईं। मुफ्त यात्रा से चेहरे पर दिखी खुशी रोजगार

और व्यवसाय के सिलसिले में मीरा-भायंदर तथा मुंबई में बसे चाकरमानियों के लिए गणेशोत्सव के दौरान अपने गांव जाना हर वर्ष एक भावनात्मक अवसर होता है। लेकिन बढ़ती महंगाई और निजी परिवहन के बढ़ते खर्च के कारण कई परिवारों के लिए गांव जाना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में मंत्री प्रताप सरनाईक की ओर से उपलब्ध कराई गई मुफ्त बस सेवा ने यात्रियों को बड़ी राहत दी। बसों से अपने गांव रवाना होते समय यात्रियों के चेहरे पर खुशी और संतोष साफ दिखाई दिया। इस पहल को केवल मुफ्त यात्रा तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि गांव में गणपति बप्पा की पूजा के लिए आवश्यक पूजा सामग्री भी यात्रियों को उपहार स्वरूप प्रदान की गई। इससे श्रद्धालुओं का उत्साह और भी बढ़ गया। मंत्री जी ने प्यार से पीठ पर हाथ रखा गांव जाने वाले कई यात्रियों ने इस पहल की सराहना करते हुए भावुक प्रतिक्रिया दी। यात्रियों ने कहा कि मंत्री प्रताप सरनाईक ने चाकरमानियों की भावनाओं को समझते हुए उन्हें न केवल मुफ्त यात्रा की सुविधा दी, बल्कि पूजा सामग्री देकर यह एहसास भी कराया कि वे अपने गांव और बप्पा के दर्शन के लिए सुरक्षित एवं सम्मानपूर्वक रवाना हो रहे हैं। गणपति उत्सव कोंकणी समाज के लिए आत्मा का विषय : सरनाईक इस अवसर पर परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक ने कहा, कोंकणी लोगों के लिए गणपति उत्सव केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि आत्मा का विषय है। साल में एक बार अपने गांव जाने वाले मेरे चाकरमानियों की यात्रा सुगम, सुरक्षित और आनंददायक हो, यही इस पहल का मुख्य उद्देश्य है। बप्पा की कृपा से यह सेवा आगे भी निर्बाध रूप से जारी रहेगी। लालपरी के रवाना होते समय यात्रियों और समर्थकों द्वारा लगाए गए गणपति बप्पा मोरया के जयघोष से पूरा जेपी नॉर्थ परिसर और आसपास का क्षेत्र भक्तिमय वातावरण से गूंज उठा। मुफ्त बस सेवा के माध्यम से बड़ी संख्या में चाकरमानी अपने गांव की ओर रवाना हुए और गणेशोत्सव की खुशियां अपने परिवार तथा गांव के लोगों के साथ मनाने के लिए निकल पड़े।

भिवंडी में इस्कॉन के मेगा किचन का भूमिपूजन, प्रतिदिन 15 हजार लोगों तक पहुंचेगा भोजन

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। धार्मिक एवं अन्नदान के क्षेत्र में सक्रिय इस्कॉन संस्था की भिवंडी शाखा द्वारा मानसरोवर स्थित मंदिर परिसर में भव्य ह्यमेगा किचनह्ल संकुल का निर्माण किया जा रहा है। रविवार को धार्मिक कार्यक्रमों के बीच इस परियोजना का भूमिपूजन संपन्न हुआ। मेगा किचन के शुरू होने के बाद प्रतिदिन करीब 15 हजार लोगों का भोजन तैयार कर जरूरतमंदों तक पहुंचाने की क्षमता विकसित होगी। भूमिपूजन समारोह में भिवंडी सहित हैदराबाद एवं सिरसिल्ला फार्म मंदिर प्राधिकरण प्रमुख सीताराम प्रभुजी, भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट प्रभारी षड्भुज गौर प्रभुजी, इस्कॉन अत्तापुर, हैदराबाद के अध्यक्ष चैतन्य अवतार प्रभुजी, भिवंडी संस्था

व्यवस्थापक नरोत्तम प्रभुजी, मंदिर व्यवस्थापक सुदामा प्रभुजी, ईशान गौर प्रभुजी, भावमय नित्यानंद प्रभुजी सहित वरिष्ठ नगरसेवक संतोष शेट्टी, प्रसाद पाटिल, विराज पवार, सोनू देशमुख तथा बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित रहे। कोरोना काल में 200 लोगों के भोजन से शुरू हुई थी सेवा। इस्कॉन भिवंडी द्वारा वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के दौरान जरूरतमंदों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराने की सेवा शुरू की गई थी। शुरूआत में प्रतिदिन करीब 200 भोजन वितरित किए जाते थे। सेवा का विस्तार होने के बाद वर्तमान में करीब 1,500 जरूरतमंदों तक प्रतिदिन भोजन पहुंचाया जा रहा है। इस सेवा का लाभ प्रवासी मजदूरों, गर्भवती महिलाओं, स्कूली विद्यार्थियों, रोजाना मजदूरी करने वाले श्रमिकों, झोपड़पट्टी वासियों, वरिष्ठ नागरिकों, बेघर लोगों तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को मिल रहा है। मंदिर व्यवस्थापक सुदामा प्रभु ने बताया कि भोजन सेवा को और व्यापक बनाने के उद्देश्य से प्रतिदिन 15 हजार भोजन तैयार करने की क्षमता वाले मेगा रसोई प्रकल्प की शुरूआत की गई है।

मीरा रोड के ऐश्वर्या आर्केस्ट्रा बार में अश्लील डांस पर पुलिस की छापेमारी

●आईपीएस डीसीपी राहुल चव्हाण के पथक की कार्रवाई; 7 बार बालाओं को कराया गया रेस्क्यू, मैनेजर और वेटर समेत 5 गिरफ्तार, 27 ग्राहक हिरासत में

मीरा रोड (उत्तरशक्ति)। मीरा रोड स्थित ऐश्वर्या आर्केस्ट्रा बार में कथित तौर पर चल रहे अश्लील डांस कार्यक्रम पर पुलिस ने छापेमारी कर बड़ी कार्रवाई की है। आईपीएस डीसीपी राहुल चव्हाण के मार्गदर्शन में गठित पुलिस पथक ने बार में छापा मारकर 7 बार बालाओं को रेस्क्यू किया, जबकि मामले में मैनेजर और वेटर समेत कुल 5 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस की कार्रवाई के दौरान बार में मौजूद 27 ग्राहकों को भी हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। कार्रवाई के बाद बार संचालक और मालिक के फरार होने की जानकारी सामने आई है। पुलिस उनकी तलाश में जुटी है। मीरा रोड पुलिस कर रही आगे की जांच बताया जा रहा है कि पुलिस को ऐश्वर्या आर्केस्ट्रा बार में अश्लील डांस कार्यक्रम चलाए जाने की सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर आईपीएस डीसीपी राहुल चव्हाण के पथक ने कार्रवाई करते हुए बार में छापा मारा। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने बार में मौजूद कर्मचारियों और ग्राहकों के खिलाफ कार्रवाई की तथा 7 बार बालाओं को रेस्क्यू किया। गिरफ्तार आरोपियों से पुलिस द्वारा पूछताछ की जा रही है। मामले में आगे की कानूनी कार्रवाई मीरा रोड पुलिस द्वारा की जा रही है। पुलिस फरार बार चालक एवं मालिक की तलाश में जुटी है और पूरे मामले की जांच जारी है।

चिंचणी में 75 वर्षों से कायम है गणेशोत्सव की ऐतिहासिक परंपरा

पालघर (उत्तरशक्ति)। जिले के चिंचणी गांव की ऐतिहासिक और स्वतंत्रता संग्राम की गौरवशाली भूमि पर स्थित छत्रपति शिवाजी महाराज चौक गणेशोत्सव मंडल इस वर्ष अपने गणेशोत्सव का 75वां वर्ष यानी अमृत महोत्सव बड़े उत्साह और भव्यता के साथ मनाने जा रहा है। यह केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि चिंचणी की सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी ऐतिहासिक विरासत का प्रतीक भी है। चिंचणी गांव का इतिहास स्वतंत्रता संग्राम से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। गांव के पांच लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में शहादत दी, जबकि 26 स्वतंत्रता सेनानियों ने देश की आजादी के लिए अपना योगदान दिया। इसी पवित्र और ऐतिहासिक भूमि पर सार्वजनिक गणेशोत्सव की परंपरा ने भी वर्षों का सफर तय किया है। बताया जाता है कि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक द्वारा सार्वजनिक गणेशोत्सव के माध्यम से समाज को एकजुट करने का आहवान किये जाने के बाद चिंचणी में कुछ शिक्षकों ने एकत्रित होकर 1914-15 के आसपास सार्वजनिक रूप से गणेशोत्सव मनाने की शुरूआत की थी। उस समय शिक्षक स्वयं अपने खर्च से उत्सव का आयोजन करते थे। इसके अलावा गांव के दानशूर नागरिक आर्थिक अथवा वस्तु स्वरूप सहायता करते थे। समय बीतने के साथ आयोजकों के सामने विभिन्न कठिनाइयां आने लगीं। वर्ष 1951 में कुछ प्रमुख व्यक्तियों के परिवारों में शोक की स्थिति उत्पन्न होने के कारण गणेशोत्सव के आयोजन को लेकर असमंजस की स्थिति बनी। उस समय गांव के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व तात्या साहेब चूरी से मार्गदर्शन लिया गया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि परिस्थितियां कैसी

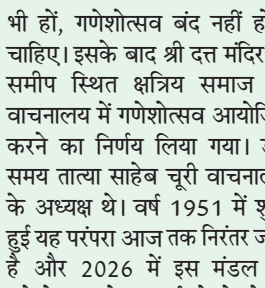

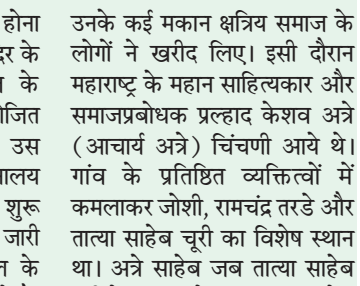

भी हों, गणेशोत्सव बंद नहीं होना चाहिए। इसके बाद श्री दत्त मंदिर के समीप स्थित क्षत्रिय समाज के वाचनालय में गणेशोत्सव आयोजित करने का निर्णय लिया गया। उस समय तात्या साहेब चूरी वाचनालय के अध्यक्ष थे। वर्ष 1951 में शुरू हुई यह परंपरा आज तक निरंतर जारी है और 2026 में इस मंडल के गणेशोत्सव को 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज चौक का गणपति भक्तों के बीच विशेष आस्था का केंद्र माना जाता है। स्थानीय श्रद्धालुओं के अनुसार यहां विराजमान गणपति बप्पा नवसाला पावणारे यानी मनोकामना पूर्ण करने वाले गणपति के रूप में प्रसिद्ध हैं।

यही कारण है कि चिंचणी के साथ-साथ आसपास के क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं। अमृत महोत्सवी वर्ष के अवसर पर मंडल की ओर से सभी श्रद्धालुओं से इस ऐतिहासिक गणपति बप्पा के दर्शन का लाभ लेने और गणेशोत्सव में सहभागी बनने का आह्वान किया गया है। इस वर्ष चिंचणी के लिए एक और ऐतिहासिक संयोग है। जिस छत्रपति शिवाजी महाराज चौक में यह गणेशोत्सव मनाया जाता है, उसके नामकरण को भी 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। बताया जाता है कि पूर्व में वर्तमान करवीर के घर से लेकर के. डी. हाईस्कूल तक का क्षेत्र ब्राह्मण गली के नाम से जाना जाता था। कालांतर में अनेक ब्राह्मण परिवार मुंबई में जाकर बस गये और उनके कई मकान क्षत्रिय समाज के लोगों ने खरीद लिए। इसी दौरान महाराष्ट्र के महान साहित्यकार और समाजप्रबोधक प्रल्हाद केशव अत्रे (आचार्य अत्रे) चिंचणी आये थे। गांव के प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों में कमलाकर जोशी, रामचंद्र तरडे और तात्या साहेब चूरी का विशेष स्थान था। अत्रे साहेब जब तात्या साहेब चूरी के घर पहुंचे, तब तात्या साहेब ने उन्हें इस क्षेत्र की भौगोलिक और सामाजिक संरचना के बारे में जानकारी दी। इस बातचीत के दौरान प्रल्हाद केशव अत्रे ने इस क्षेत्र को शिवाजी महाराज चौक नाम देने का सुझाव दिया। गांव के लोगों ने भी तत्काल इस नाम को स्वीकार कर लिया। इस ऐतिहासिक नामकरण को भी वर्ष 2026 में 75 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। चिंचणी का छत्रपति शिवाजी महाराज चौक गणेशोत्सव मंडल आज 75 वर्ष की यात्रा पूरी कर रहा है, लेकिन इसकी जड़ें इससे भी कहीं पुरानी हैं। लोकमान्य तिलक के सार्वजनिक गणेशोत्सव के विचार से प्रेरित होकर शुरू हुई यह परंपरा स्वतंत्रता आंदोलन की स्मृतियों, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक चेतना को अपने भीतर समेटे हुए है। अमृत महोत्सव के अवसर पर मंडल से जुड़े पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने नागरिकों से बड़ी संख्या में सहभागी होकर ऐतिहासिक गणपति बप्पा के दर्शन करने और इस गौरवशाली परंपरा के साक्षी बनने की अपील की है।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय:
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

10 साल की मेहनत के बाद लॉन्च हुआ भक्तिद्वार, अनूप जलोटा बोले–यह भक्ति और शांति का द्वार है

मुंबई। भक्ति, आध्यात्म और आधुनिक तकनीक को एक मंच पर लाने वाले भक्तिद्वार टेलीविजन ऐप का मुंबई में भव्य शुभारंभ किया गया। प्रसिद्ध भजन गायक और पद्मश्री से सम्मानित अनूप जलोटा ने ऐप लॉन्च किया और इसके लोगो का भी अनावरण किया। इस अवसर पर मेहमानों को प्लेटफॉर्म पर जल्द उपलब्ध होने वाले विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यक्रमों की झलक भी दिखाई गई। फिल्म और टेलीविजन जगत के कलाकार संदीप मोहन और संजय स्वराज भी लॉन्च

समारोह में मौजूद रहे। दोनों कलाकारों ने भक्तिद्वार के लिए तैयार किए गए विशेष कार्यक्रमों में काम किया है।

समारोह में मौजूद सभी अतिथियों और सहयोगियों को स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया। भक्तिद्वार टेलीविजन ऐप के संस्थापक दिनेश असोपा ने बताया कि यह प्रोजेक्ट उनके लिए लंबे समय से देखा गया सपना था, जिसे हकीकत में बदलने में करीब एक दशक का समय लगा। दिनेश असोपा ने कहा, मैं पिछले 10 सालों से इस ऐप की परिकल्पना और इसके निर्माण पर काम कर रहा हूं।

स्वामी: शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालय: मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

एआई के साथ विकास की नई राह पर पूर्वांचल विश्वविद्यालय: प्रो.राकेश सिंह

एआई मंथन-2.0 में कुलपति ने शिक्षा, स्वास्थ्य और सुशासन में तकनीक के उपयोग पर रखा विजन

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। कानपुर छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर में आयोजित कृत्रिम बुद्धिमत्ता मंथन-2.0 में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की टीम ने सहभागिता की। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह ने कुलाधिपति एवं राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल के समक्ष विश्वविद्यालय का विजन प्रस्तुत किया।

कुलपति ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी उपयोग से उच्च शिक्षा को अधिक तकनीक आधारित, प्रभावी और नवाचारपरक बनाया जा सकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के साथ भविष्य की कार्ययोजना और एआई के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी।

प्रस्तुतिकरण के दौरान विद्यार्थियों के लिए छात्रावास सुविधाओं के विस्तार, खेलकूद को बढ़ावा देने, इंटरनेट सुविधाओं को सुदृढ़ करने और विद्यार्थियों की सुरक्षा से जुड़ी पहलों को भी सामने रखा गया। इसके साथ ही क्षय रोग से पीड़ित मरीजों के सहयोग एवं जागरूकता, किशोरियों के एचपीवी टीकाकरण, सौ सप्ताह के नशामुक्ति अभियान, सेवा पखवाड़ा तथा बाल संरक्षण गृह से संबंधित विश्वविद्यालय की कार्ययोजना प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों, विशेषज्ञों और प्रतिनिधियों ने एआई के माध्यम से शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, स्वास्थ्य एवं सुशासन को नई दिशा देने की संभावनाओं पर विचार साझा किए। मंथन के दौरान उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच एआई आधारित सहयोग और नवाचार की नई संभावनाओं पर भी चर्चा हुई।

पूर्वांचल विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह के नेतृत्व में कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. गिरिधर मिश्र, प्रो. सौरभ पाल, डॉ. विक्रान्त भटेजा, डॉ. सुनील यादव एवं दिलीप कुमार यादव ने सहभागिता की।

मेधावी छात्रों को किया गया सम्मानित, 240 विद्यार्थियों को मिला मेडल और प्रशस्ति पत्र

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शहर के हिंदी भवन में रविवार को माइनॉरिटी वेलफेयर सोसाइटी के तत्वावधान में अल्पसंख्यक मेघावी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें वर्ष 2026 की हाईस्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षा में 70 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 240 मेधावी विद्यार्थियों को मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक नफीस अहमद ने सभी बच्चों को मुबारकबाद देते हुए कहा की आप सभी लोगो के अंदर विशेष प्रतिभा थी जिसको देखते हुए इस संस्था ने आप लोगो को सम्मानित किया इस सम्मान को यहीं मत रुकने दीजियेगा बल्कि जब तक आप सफलता के शिखर को ना पहुंच जाये तब तक संघर्ष करते रहिएगा। क्योंकि यह दुनिया अब ज्ञान और विज्ञान की हो गयी है इसलिए दिनी और दुनियावी दोनों तालीम हासिल करना जरुरी है।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता अध्यक्ष नगर पंचायत मड़ीयाहूँ रुकसाना कमाल ने कहा की इन बच्चों की हौसला अफजाई इनके अंदर के उत्साह को और आगे ले जाएगी और अन्य बच्चों के लिए प्रेरणादायी साबित होगी।और लड़कियाँ यहाँ अच्छी संख्या में सम्मानित हो रही हैं जो अपने आप में एक बड़ी बात है कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था अध्यक्ष हफीज शाह ने करते हुए कहा की यह कार्यक्रम लगातार दस वर्षों से हो रहा है यहाँ से सम्मानित होकर जाने वाले बहुत से बच्चें आज उच्च पदो पर कार्यरत होकर अपना और अपने परिवार का नाम रोशन कर रहे हैं।

प्रोग्राम में नईम और जइम दोनों भाइयों का भी सम्मान किया गया जिन्होंने बिना दहेज और बिना बाराति के शादी करके समाज में दहेज के खिलाफ एक सन्देश दिया।

समारोह की शुरूआत.... द्वारा कुरआन-ए-पाक की तिलावत से हुई, इसके बाद एक नन्ही बच्ची ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर वातावरण को भावनात्मक बना दिया।

विशिष्ट अतिथि कमाल फारूकी ने कहा कि यह संस्था पूरे जिले के मेधावी छात्रों को सम्मानित कर उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का सराहनीय कार्य कर रही है। वहीं डॉ. नोमान खान ने बच्चों को सामाजिक जागरूकता और संवेदनशीलता बनाए रखने की सलाह दी।

कार्यक्रम को शशांक सिंह रानू ने भी संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का होना भी उतना ही आवश्यक है।जिससे की समाज में एक अच्छा सन्देश जाये। सरदार सतनाम सिंह ने कहा की आने वाले समय में शिक्षा ही देश को तरक्की की तरफ ले जायगी इसलिए इसके महत्व को समझना चाहिए। भारतीय स्टेट बैंक की अधिकारी रौनक अफरोज ने कहा की जब किसी घर में एक बेटी तालीम हासिल करती है तो वो दो दो घरों को तालीम से जोड़ती है और अब आने वाला समय बेटियों का है।

इस अवसर पर शकील अहमद,अबुजर शेख, हाजी एजाज अहमद, हाजी सैय्यद फरोग, हाजी मो राशिद, शोएब कलाम, बेलाल खान,तौसीफ अहमद,साकिब अहमद,फिरोज अहमद पप्पू,नेयाज ताहिर शेखु एडवोकेट,आमिर, तौसीफ, शहबाज खान, जाफर खान, नदीम अंसारी, आमिर कुरैशी,आदिल जैदी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मेंहदी रजा एडवोकेट ने किया तथा आभार संस्था के अध्यक्ष हफीज शाह ने व्यक्त किया।

कलराज मिश्र की धर्मपत्नी सत्यवती मिश्रा के निधन पर भाजपा में शोक

गाजीपुर (उत्तरशक्ति)। भाजपा के वरिष्ठ नेता, राजस्थान के पूर्व राज्यपाल एवं गाजीपुर जनपद के सैदपुर क्षेत्र के ग्राम पंचायत मलिकपुर के मूल निवासी कलराज मिश्र की धर्मपत्नी सत्यवती मिश्रा (लगभग 80 वर्ष) का रविवार को गौतमबुद्धनगर (नोएडा) स्थित मेट्रो हॉस्पिटल में उपचार के दौरान निधन हो गया। वह पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रही थीं।

सत्यवती मिश्रा के निधन की सूचना मिलते ही भाजपा परिवार में शोक की लहर दौड़ गई। भाजपा जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश राय ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए इसे भाजपा परिवार की अपूरणीय क्षति बताया।

उन्होंने कहा कि सत्यवती मिश्रा का निधन अत्यंत पीड़ादायक और दुःखद है। उन्होंने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति एवं अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने की प्रार्थना की। साथ ही शोक संतप्त परिजनों एवं शुभचिंतकों को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति देने की कामना की।

भाजपा जिलाध्यक्ष ने कहा कि सत्यवती मिश्रा का स्नेह, सरलता और पारिवारिक आत्मीयता सदैव स्मरणीय रहेगी। उनके निधन से परिवार के साथ-साथ भाजपा परिवार ने भी एक आत्मीय अभिभावक जैसी उपस्थिति खो दी है।

शोक व्यक्त करने वालों में प्रदेश उपाध्यक्ष कृष्ण बिहारी राय, महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष सरोज कुशवाहा, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष भानु प्रताप सिंह, क्षेत्रीय मंत्री राजेश राजभर एवं डॉ. विजय यादव, पूर्व जिलाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह, बृजेन्द्र राय, सपना सिंह, प्रवीण सिंह, दयाशंकर पांडेय, प्रो. शोभनाथ यादव, विष्णु प्रताप सिंह, अवधेश राजभर, सुमित तिवारी, जिला मीडिया प्रभारी शशिकान्त शर्मा, सुरेश बिंद, संकठा प्रसाद मिश्र, रमेश सिंह पप्पू, अखिलेश सिंह, श्यामराज तिवारी सहित भाजपा के पदाधिकारी, नेता एवं कार्यकर्ता शामिल रहे।

सत्कार ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशइंस्टीट्यूशंस सेंटर पर ऑनलाइन वेबिनार हुई आयोजित

बेबीनार के वक्ता डॉ पीयूष श्रीवास्तव ने साझा किया अनुभव

जितेन्द्र कनोजिया

चंदवक, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। स्थानीय बाजार में स्थित सत्कार ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशइंस्टीट्यूशंस पर रविवार को ऑल इण्डिया अलायड एंड हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स वेलफेयर एसोसिएशन के तत्वाधान में रोल ऑफ फिजियोथेरेपी इन ऑर्गन ट्रांसप्लांटेशन पर वेबिनार का आयोजन हुआ।वेबिनार के मुख्य वक्ता फिजियोथेरेपिस्ट एंड ट्रांसप्लांट कोआर्डिनेटर किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ के डॉ पीयूष श्रीवास्तव रहे,इस दौरान वेबिनार से जुड़कर सैकड़ों चिकित्सकों ने ज्ञान प्राप्त किया। इस बाबत एसोसिएशन के राष्ट्रीय संयोजक डॉ अवनीश कुमार सिंह ने बताया कि आज बढ़ती हुई बीमारियाँ और उन बीमारियों में जल्दी रिकवरी के लिए फिजियोथेरेपी का महत्व प्रमुख रूप से है। इसलिए आम जनमानस तक वेबिनार के माध्यम से एसोसिएशन फिजियोथेरेपी के महत्व को बता कर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एसोसिएशन प्रत्येक रविवार को निःशुल्क वेबिनार का आयोजन किया जाता है।वेबिनार में सम्पूर्ण भारतवर्ष में अलग अलग प्रदेशों के अलग - अलग जिलों में किया जाता है साथ ही वेबिनार को कनाडा और दुबई से भी चिकित्सक जुड़ अपने अनुभव को साझा किया।इस अवसर पर डॉ. मनीष सिंह,डॉ. नीरज यादव, डॉ. सीमा पांडे ,डॉ. अमरेश डॉ.मयूरी, डॉ॰ तनुश्री, डॉ सर्वेश, डॉ राम, डॉ विशाल , डॉ. तारक, डॉ संतोष, डॉ. दीपू , डॉ. रितेश डॉ. आशीष समेत तमाम लोग मौजूद रहे।वही बेबीनार से जुड़े लोगो का डॉ.आनन्द, काशीनाथ व कृष्णमोहन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पीएम श्री प्राथमिक विद्यालय डेडुवाना में एमडीएम व्यवस्था का किया गया निरीक्षण

केराकत, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। पीएम श्री प्राथमिक विद्यालय डेडुवाना में शनिवार को जिला समन्वयक एमडीएम अरुण मौर्य, जिला समन्वयक प्रशिक्षण विशाल उपाध्याय एवं जिला समन्वयक एमआईएस दुर्गेश पटेल ने विद्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने विद्यालय के भौतिक परिवेश, शैक्षणिक व्यवस्था सहित विभिन्न निर्धारित पैरामीटर्स का जायजा लिया। इसके साथ ही मध्याह्न भोजन (एमडीएम) की गुणवत्ता एवं व्यवस्था का भी परीक्षण किया गया। अधिकारियों ने बच्चों के साथ मंत्रोच्चार के बीच एमडीएम भोजन ग्रहण कर उसकी गुणवत्ता को परखा। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों के समुचित एवं प्रभावी उपयोग को लेकर विद्यालय परिवार की सराहना की गई। अधिकारियों ने विद्यालय की व्यवस्थाओं का अवलोकन करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। विद्यालय परिवार ने निरीक्षण के लिए पहुंचे सभी अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

करें योग, रहें निरोग जन जागरण यात्रा के साथ पतंजलि योग परिवार सोनभद्र की हुई मासिक बैठक

◆ खड़िया हनुमान मंदिर परिसर में बैठक हुई सम्पन्न

सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। करें योग, रहें निरोग जन जागरण यात्रा के साथ पतंजलि योग परिवार सोनभद्र की मासिक बैठक रविवार को खड़िया हनुमान मंदिर परिसर शक्तिनगर सोनभद्र में महंत गोपाल दास जी की अध्यक्षता व वरिष्ठ योग साधक लल्लन तिवारी के कुशल नेतृत्व में हुई।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम परम पूज्य स्वामी जी व आचार्य श्री की सूक्ष्म उपस्थिति को नमन करते हुए मंत्रोच्चारण के साथ प्रारंभ किया गया तथा हनुमान मंदिर के प्रधान पुजारी गोपाल दास जी को अंगवस्त्र व माल्यार्पण से सम्मानित किया गया। इसके अलावा पतंजलि योग परिवार के सभी कर्मठ योग साधकों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से ,मुख्य योग शिक्षक प्रशिक्षण शिविर में जाने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया। 6 नए सदस्यों को सदस्यता दी गई। नियमित योग कक्षा बढ़ाने पर बल दिया गया। योग साधकों को भारत स्वाभिमान एप्स डाउनलोड करने के लिए कहा गया। पतंजलि योग परिवार सोनभद्र द्वारा जल्द ही बभनी में 25 दिवसीय योग शिविर लगाने पर विचार विमर्श किया गया। कार्यक्रम के अंत में शांति पाठ के साथ, समापन के पश्चात सभी उपस्थित योग साधकों को प्रसाद वितरण किया गया।

बैठक में भारत स्वाभिमान जिला प्रभारी वीरेंद्र कुमार श्रीवास्तव, पतंजलि योग समिति जिला प्रभारी रवि प्रकाश त्रिपाठी, जिला संरक्षक मनोज कुमार सिंह, जिला योग विस्तारक शिव पूजन झां, भारत स्वाभिमान जिला महामंत्री सुनील कुमार चौबे, पतंजलि योग समिति सह जिला प्रभारी दिनेश पाठक, युवा भारत जिला महामंत्री /सोशल मीडिया प्रभारी योगी संकट मोचन, नगर संयोजक दिनेश लाल श्रीवास्तव, रामकुमार तिवारी ,केपी सिंह, प्रमुख शिक्षक नागेंद्र नाथ चौबे, तहसील संगठन मंत्री रूप नारायण सिंह, बृजेश कुमार सिंह, राकेश प्रभारी शक्तिनगर, संकठा पांडेय ,त्रिभुवन सिंह, सुनील पांडेय ,संतोष पांडेय ,व्यापार मंडल अध्यक्ष शिवकुमार सिंह, महिला पतंजलि योग प्रभारी दक्षिणी बहन ममता, सोशल मीडिया प्रभारी प्रांजल ,गुंजन सिंह समेत काफी संख्या में योग साधक भाई बहन उपस्थित रहे।

मीरपुर खास में जलभराव और कीचड़ से ग्रामीणों का फूटा गुस्सा

अरशद अली

मछलीशहर,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। तहसील मछलीशहर के विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत कोरमलपुर के मीरपुर खास गांव में बुनियादी सुविधाओं के अभाव को लेकर ग्रामीणों का आक्रोश फूट पड़ा। मुख्य संपर्क मार्ग पर जलभराव, कीचड़ और कच्ची सड़क की बदहाल स्थिति से नाराज ग्रामीणों ने रविवार को विरोध प्रदर्शन कर अपनी नाराजगी जताई।

ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन, 14 सितंबर से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल की दी चेतावनी

ग्रामीणों का आरोप है कि मामूली बारिश होते ही गांव का मुख्य कच्चा मार्ग जलभराव और कीचड़ से तालाब में तब्दील हो जाता है। कई स्थानों पर घुटनों तक कीचड़ जमा होने के कारण लोगों का आवागमन मुश्किल हो जाता है। ग्रामीणों के मुताबिक सड़क की स्थिति इतनी खराब है कि पैदल चलना भी दूभर हो गया है।

सबसे अधिक परेशानी स्कूली बच्चों, बुजुर्गों, महिलाओं और मरीजों को उठानी पड़ रही है। फिसलन और कीचड़ के कारण राहगीरों व बाइक सवारों के गिरकर चोटिल होने का खतरा बना रहता है। ग्रामीणों का कहना है कि लंबे समय से समस्या के समाधान की मांग की जा रही है, लेकिन जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की ओर से ठोस कार्रवाई नहीं की गई।

ग्रामीणों ने विधायक, सांसद, ब्लॉक प्रमुख, जिला पंचायत सदस्य, प्रशासन और ग्राम प्रधान पर समस्या के प्रति उदासीनता बरतने का आरोप लगाया है। आक्रोशित ग्रामीणों ने ऐलान किया है कि यदि समस्या का समाधान नहीं हुआ तो 14 सितंबर, सोमवार को सुबह 11 बजे से अनिश्चितकालीन अनशन एवं भूख हड़ताल शुरू की जाएगी।

ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि तत्काल मौके का निरीक्षण कर जलभराव की समस्या दूर कराई जाए तथा मुख्य संपर्क मार्ग को पक्का कराकर आवागमन योग्य बनाया जाए।

28 थानों की पुलिस ने कसा शिकंजा, 205 अभियुक्त गिरफ्तार

◆ एसएसपी कुँवर अनुपम सिंह के निर्देश पर बड़ा अभियान

191 वारंटी और 14 वांछित दबोचे गए, अपराधियों में मचा हड़कंप

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिले में कानून-व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने और फरार आरोपियों पर शिकंजा कसने के लिए जौनपुर पुलिस ने रविवार को व्यापक गिरफ्तारी अभियान चलाया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुँवर अनुपम सिंह के निर्देशन में जनपद के 28 थानों की पुलिस टीमों ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए कुल 205 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। इनमें 191 वारंटी/एनबीडब्ल्यू तथा 14 वांछित अभियुक्त शामिल हैं।

पुलिस के अनुसार अभियान के दौरान सबसे अधिक कार्रवाई खुटहन थाना क्षेत्र में 15 अभियुक्तों के खिलाफ हुई, जिनमें 13 वारंटी और दो वांछित शामिल हैं। इसके बाद चंदवक में 12, लाइन बाजार और गौराबादशाहपुर में 11-11 तथा मुंगराबादशाहपुर और मड़ियाहूं में 10-10 वारंटियों की गिरफ्तारी की गई।

थानावार गिरफ्तारियों का पूरा विवरण: कोतवाली थाना- 07 एनबीडब्ल्यू, लाइन बाजार थाना- 11 एनबीडब्ल्यू, जफराबाद थाना- 04 एनबीडब्ल्यू, 03 वांछित, शाहगंज थाना- 07 एनबीडब्ल्यू, खेतासराय थाना- 06 एनबीडब्ल्यू, खुटहन थाना- 13 एनबीडब्ल्यू, 02 वांछित, सरपतहां थाना- 09 एनबीडब्ल्यू, केराकत थाना- 09 एनबीडब्ल्यू, 02 वांछित, चंदवक थाना- 12 एनबीडब्ल्यू, जलालपुर थाना- 06 एनबीडब्ल्यू, 04 वांछित, गौराबादशाहपुर थाना- 11 एनबीडब्ल्यू, सरायख्वाजा थाना- 06 एनबीडब्ल्यू, बक्सा थाना- 08 एनबीडब्ल्यू, सिकरारा थाना- 07 एनबीडब्ल्यू, तेजीबाजार थाना- 03 वारंटी, बदलापुर थाना- 04 एनबीडब्ल्यू, सिंगरामऊ थाना- 03 एनबीडब्ल्यू, महराजगंज थाना- 04 एनबीडब्ल्यू, सुजानगंज थाना- 06 एनबीडब्ल्यू, मछलीशहर थाना- 06 एनबीडब्ल्यू, मुंगराबादशाहपुर थाना- 10 एनबीडब्ल्यू, मीरगंज थाना- 07 एनबीडब्ल्यू, पवारा थाना- 04 एनबीडब्ल्यू, मड़ियाहूं थाना- 10 एनबीडब्ल्यू, रामपुर थाना- 06 एनबीडब्ल्यू, नेवढ़िया थाना- 04 एनबीडब्ल्यू, बरसठी थाना- 05 एनबीडब्ल्यू, 03 वांछित एवं सुरेरी थाना - 03 एनबीडब्ल्यू।

191 वारंटी और 14 वांछित गिरफ्तार: पुलिस की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक 28 थानों की कार्रवाई में कुल 191 एनबीडब्ल्यू/वारंटी अभियुक्त गिरफ्तार किए गए। इसके अलावा 14 वांछित अभियुक्तों को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया। वांछित अभियुक्तों में जफराबाद के तीन, खुटहन के दो, केराकत के दो, जलालपुर के चार और बरसठी के तीन आरोपी शामिल हैं। एसएसपी के निर्देशन में चलाए गए इस व्यापक अभियान का उद्देश्य न्यायालय से जारी वारंटों का प्रभावी अनुपालन कराने के साथ ही वांछित आरोपियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित करना है। जौनपुर पुलिस ने स्पष्ट किया है कि वारंटी एवं वांछित अभियुक्तों के खिलाफ विशेष अभियान लगातार जारी रहेगा।

साल्वेशन हॉस्पिटल में नौवीं स्टेट ताइक्वांडो चैंपियनशिप का भव्य शुभारंभ

डॉ.इम्तियाज अहमद

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शहर के प्रतिष्ठित साल्वेशन हॉस्पिटल परिसर में शनिवार की देर शाम नौवीं स्टेट ताइक्वांडो चैंपियनशिप प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ हुआ। प्रतियोगिता का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे खेल एवं युवा कल्याण मंत्री गिरीश चंद्र यादव ने किया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मंत्री गिरीश चंद्र यादव और विवेक श्रीवास्तव एवं प्रतीक श्रीवास्तव ने पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। इसके बाद दीप प्रज्वलित कर प्रतियोगिता का औपचारिक शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए मंत्री गिरीश चंद्र यादव ने कहा कि खेल हमारे शरीर के विकास के साथ-साथ स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है। बच्चों और युवाओं को पढ़ाई के साथ खेलों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। उन्होंने साल्वेशन हॉस्पिटल द्वारा ताइक्वांडो प्रतियोगिता के आयोजन के लिए अपने परिसर में स्थान उपलब्ध कराने की सराहना करते हुए इसे सराहनीय पहल बताया। मंत्री ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि सरकार खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि आज प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे बच्चों में से ही आने वाले समय में कोई खिलाड़ी ओलंपिक तक पहुंचकर देश का नाम रोशन कर सकता है।उन्होंने खिलाड़ियों को पूरी मेहनत, अनुशासन और लगन के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रतियोगिता के शुभारंभ के दौरान खिलाड़ियों और आयोजकों में खासा उत्साह देखने को मिला।

थानागद्दी में 51 निरंकारी भक्तों ने किया रक्तदान, दिया मानवता का संदेश

थानागद्दी,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। संत निरंकारी मिशन की सामाजिक शाखा संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में रविवार को संत निरंकारी सत्संग भवन, थाना गद्दी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की प्रेरणा से आयोजित शिविर में संत निरंकारी सेवादल, साध संगत और स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। शिविर में 51 रक्तदाताओं ने स्वेच्छा से रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया।

जौनपुर जोन के जोनल इंचार्ज अमरनाथ विश्वकर्मा ने बताया कि रक्तदान शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर दो बजे तक चला। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने इसमें भाग लेकर पूरे उत्साह और समर्पण के साथ रक्तदान किया।

इस अवसर पर विशाल संत समूह को संबोधित करते हुए केंद्रीय ज्ञान प्रचारक, बेंगलुरु बख्शी राम ने कहा कि रक्तदान ऐसा सामाजिक कार्य है, जो जाति, धर्म और पहचान से ऊपर उठकर मानवीय मूल्यों को प्रदर्शित करता है। उन्होंने कहा कि मिशन का संदेश है–'रक्त नाड़ियों में बहे, नालियों में नहीं।' रक्तदान को सेवा और भक्ति का अभिन्न हिस्सा बताते हुए उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है और इसके माध्यम से जरूरतमंदों को जीवन प्रदान करने में सहयोग मिलता है।

उन्होंने कहा कि जनपद के इतिहास में थाना गद्दी शाखा में पहली बार रक्तदान शिविर आयोजित हुआ है। निरंकारी संत निस्वार्थ भाव से रक्तदान कर मानवता की सेवा कर रहे हैं। रक्तदान प्राकृतिक एकता और विश्व भाईचारे का प्रतीक है।

शिविर में जिला अस्पताल के डॉ. अर्पित प्रताप सिंह के नेतृत्व में चिकित्सकीय टीम मौजूद रही। रक्तदाताओं की स्वास्थ्य जांच, स्वच्छता की व्यवस्था तथा जलपान का विशेष प्रबंध किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय निरंकारी सेवादल का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

थाना गद्दी ब्रांच के मुखी राम कुमार ने सभी रक्तदाताओं और साध संगत का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में संयोजक एवं क्षेत्रीय संचालक सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

आयोजकों ने कहा कि यह अभियान केवल रक्तदान तक सीमित नहीं है, बल्कि सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के करुणा, सेवा और एकत्व के संदेश को व्यवहार में उतारने का माध्यम है। मानवता की सेवा को सर्वोच्च मानते हुए संत निरंकारी मिशन द्वारा ऐसे सेवा कार्य निरंतर किए जा रहे हैं।

चोरों ने लाखों के मॉल पर फेरा हाथ, जांच में जुटी पुलिस

केराकत, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। स्थानीय क्षेत्र के तरियारी गांव निवासी शीला खैरवार पत्नी संजय खैरवार रोजान्तर की भांति रविवार की रात खाना खा कर घर में सो गई आधी रात बाद अज्ञात चोर घर के पीछे से घुसकर चोरी की वारदात को बेखौफ होकर अंजाम दिए।

सुबह नींद खुलने पर घर का सामान बिखरा देख चोरी की जानकारी हुई,घर के पीछे जाकर देखने पर टूटा हुआ बक्सा पड़ा मिला। जांच करने पर दो पायल, चार बिछिया, एक लॉकेट, एक झुमका, हाफ करधनी, ताली-पिन समेत अन्य सामान गायब देख परिजनों के पैरों तले से जमीन खिसक गई। तत्पश्चात घटना की सूचना पुलिस को दी गई सूचना पर पहुंची पीआरबी पुलिस मौके ए वरदात का मुआवना की,भुक्तभोगी ने चोरी हुई सामान की कीमत अनुमानित लाखों रुपए बताया।वही चोरी इस वारदात से ग्रामीणों में भय का माहौल व्याप्त है।

पत्रकार विष्णु कांत मिश्रा मुंबई प्रवास पर

मुंबई (उत्तर शक्ति)। जनपद जौनपुर, विकास खण्ड मुंगरा बादशाहपुर थाना पवारा बाजार के पत्रकार विष्णु कांत मिश्रा (कलेक्टर) अपने निजी प्रवास पर अपने परिवार के साथ मुंबई आए हुए हैं। जिसमें पत्नी आरती मिश्रा (धर्मा देवी महाविद्यालय पवारा) लिपिक पद पर कार्यरत हैं। पुत्र अक्षत मिश्रा, पुत्री अक्षिता मिश्रा सहित नालासोपारा पश्चिम में अपने साढु भाई के यहां ठहरे हुए हैं। दिनांक 20 सितंबर 2026 को अपने पैतृक गांव लौट जाएंगे। यदि किसी सज्जन को संपर्क करना हो तो मोबाइल नंबर 9889711508 पर संपर्क कर सकते हैं।

इंदौर नगर निगम ने कर में दी छूट

प्रणित नरेंद्र तिवारी
इंदौर (उत्तरशक्ति)। वर्ष 2026 की तीसरी राष्ट्रीय लोक अदालत नगर निगम के लिए राहतभरी रही। 12 सितंबर को आयोजित इस लोक अदालत में नगर निगम को 97.57 करोड़ रुपये राजस्व के रूप में मिले। इसमें से 92.71 करोड़ रुपये का राजस्व संपत्ति कर, जल कर और कचरा कर के रूप में आम नागरिकों ने जमा कराया, जबकि इंदौर विकास प्राधिकरण (आईडीए) ने 3.36 करोड़ और मप्र मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने करीब डेढ करोड़ रुपये टैक्स के रूप में जमा कराया। शनिवार देर रात तक नगर निगम के अधिकारी, कर्मचारी रसीदों की इंट्री में जुटे रहे, जिसके बाद रविवार को आंकड़े जारी हुए।

सैमसंग सर्टिफाइड री-न्यूड ने गैलेक्सी एस 26 सीरीज को और अधिक ग्राहकों तक पहुँचाया

पटना (उत्तरशक्ति)। सैमसंग इंडिया अब गैलेक्सी एस 26 सीरीज को अपने सैमसंग सर्टिफाइड री-न्यूड प्रोग्राम के तहत उपलब्ध करा रहा है। सैमसंग की तीसरी पीढ़ी के एआई फोन्स के रूप में, सर्टिफाइड री-न्यूड गैलेक्सी एस 26 अल्ट्रा और गैलेक्सी एस 26 सैमसंग डॉट कॉम पर उपलब्ध हैं। ये डिवाइस नए जैसे हैं और बेहतरीन मूल्य पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। गैलेक्सी एस 26 सीरीज को अपनी सर्टिफाइड री-न्यूड लाइन-अप में शामिल करके सैमसंग अब अधिक ग्राहकों को अपने नवीनतम फ्लैगशिप इनोवेशन का अनुभव करने का अवसर दे रहा है। गैलेक्सी एस 26 अल्ट्रा में गैलेक्सी एस सीरीज डिवाइस पर अब तक का सबसे शक्तिशाली हार्डवेयर, इंडस्ट्री-लीडिंग कैमरा सिस्टम और सबसे सहज, प्रोएक्टिव तथा अनुकूलनशील गैलेक्सी एआई अनुभव मौजूद हैं। इसमें बिल्ट-इन प्राइवेसी डिस्प्ले भी पेश किया गया है, जो उपयोगकर्ता के लिए कंटेंट को स्पष्ट रखता है, जबकि आसपास मौजूद अन्य लोगों की नजर से इसे सीमित करता है।

क्या राज्य आबकारी विभाग बार मालिकों को संरक्षण दे रहा है?

-आदेश मिश्र

मुंबई। ठाणे जिले के ए, बी और ई प्रभागों में ऑर्केस्ट्रा बार और सर्विस बार में नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को दी गई शिकायत में आरटीआई कार्यकर्ता मनोहर जरियाल ने आरोप लगाया है कि रोजगार के नाम पर महिलाओं को देर रात तक रोककर उनसे डांस करवाया जा रहा है। जरियाल ने यह भी आरोप लगाया कि सरकारी नियमों का उल्लंघन करने वाले इन सभी बार को राज्य आबकारी विभाग का संरक्षण प्राप्त है। आरटीआई कार्यकर्ता मनोहर जरियाल ने अपनी शिकायत में ठाणे जिले के कुल सोलह बार के नामों का उल्लेख किया है। इसमें सीजर पार्क, इंस्पेक्टरों के काम करने के तरीकों पर भी सवाल उठाए गए हैं। आरोप लगाया गया है कि संबंधित इंस्पेक्टर शाम 6 बजे के बाद अपने कार्यालय बंद कर घर चले जा रहे हैं, जबकि रात में बार का निरीक्षण किया जाना चाहिए। इसलिए शिकायत में कहा गया है कि नियमों का उल्लंघन करने वाले बार मालिकों पर कार्रवाई का कोई डर नहीं है। न्यू पंजाब (आइजल), गोल्डन नटराज, आइकॉन, श्रद्धा, श्री कृष्ण भवन, जय श्री कृष्ण, मधुर मनीष ऑर्केस्ट्रा बार हैं, जबकि हवेली, ग्लोबल फिटनेस, हर्षित, शिल्पा, मुंबई पैलेस आम्रपाली सर्विस बार हैं। जबकि संबंधित ऑर्केस्ट्रा बार की जगहों को अप्रूव्ड मैप के अनुसार अलग-अलग 'परमिट रूम' और रेस्टोरेंट बनाने की इजाजत थी, दोनों जगहों के बीच की दीवारें हटा दी गई हैं और जगहों को मिला दिया गया है। साथ ही, जबकि बार काउंटर परमिट रूम में होना जरूरी है, इसे रेस्टोरेंट एरिया में रखा जा रहा है और वहीं से शराब बेची और पी जा रही है। जबकि सर्विस बार में काम करने वाली महिलाओं को उनके एम्प्लॉयमेंट डॉक्यूमेंट्स के अनुसार 'बारबाला' के तौर पर इजाजत है, उन्हें देर रात तक बार में रखा जा रहा है और उनसे डांस करवाया जा रहा है।

सीवर लाइन में साजिश का खुलासा! बोरियों में भरी बालू ने खोली बड़ी करतूत, नगर निगम ने दी FIR की तहरीर

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। जनपद में जलभराव की समस्या के बीच नगर निगम की सीवर सफाई में चौंकाने वाला मामला सामने आया है। शिवाला, सरायनंदन, नगवा समेत करीब आधा दर्जन वार्डों की सीवर लाइनों में बालू से भरी बोरियां, पत्थर, लकड़ी का बुरादा, प्लाई और प्लास्टिक की सामग्री ठूंसी मिली है। नगर निगम ने इसे सीवर लाइन जाम कर शहर में जलभराव की स्थिति पैदा करने की कथित साजिश माना है।

शुक्रवार रात शिवाला क्षेत्र में सीवर लाइन की सफाई के दौरान करीब 12 बोरी बालू बरामद हुई। मुख्य सीवर लाइन में सामग्री भरे होने से लाइन चोक हो गई थी, जिसके कारण आसपास की सहायक गलियों में सीवर का पानी ओवरफ्लो होने लगा मामले की गंभीरता को देखते हुए महापौर अशोक कुमार तिवारी और नगर आयुक्त हिमांशु नागपाल ने शनिवार को शिवाला क्षेत्र में मौके का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने सीवर लाइन में मिली सामग्री को देखा और पूरे मामले की जांच के निर्देश दिए।

महापौर ने कहा कि नगर निगम और जलकल विभाग की टीमें जलभराव वाले स्थानों पर लगातार काम कर रही हैं। वहीं, पिछले कुछ दिनों से सोशल मीडिया पर जलभराव की तस्वीरों और वीडियो के जरिए नगर निगम को निशाना बनाए जाने की बात भी उन्होंने कही। उन्होंने कहा कि सीवर लाइन में इस तरह बालू की बोरियां मिलना गंभीर विषय है और इसकी गहन जांच जरूरी है। नगर निगम अब आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रहा है, ताकि सीवर लाइन में सामग्री डालने वाले लोगों की पहचान की जा सके। नगर आयुक्त हिमांशु नागपाल ने कहा कि मामले की तह तक पहुंचने और दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई के लिए निगम पूरी गंभीरता से जुटा है। जलकल विभाग के अधिशासी अभियंता, जोन-2 की ओर से भेलूपुर थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने के लिए तहरीर दी गई है। तहरीर में आरोप लगाया गया है कि मुख्य सीवर लाइन को जानबूझकर चोक करने की कोशिश की गई, जिससे जलभराव की स्थिति उत्पन्न हुई। नगर निगम ने शहरवासियों से अपील की है कि यदि कोई व्यक्ति सीवर लाइन या सरकारी संपत्ति के साथ छेड़छाड़ करता दिखाई दे तो तत्काल नगर निगम को इसकी सूचना दें। अब जांच का फोकस इस बात पर है कि आखिर सीवर लाइन में इतनी मात्रा में बालू की बोरियां किसने और क्यों डालीं।

शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा आयोजित सेवानिवृत्त शिक्षक सम्मान समारोह संपन्न

-प्रेम चंद मिश्रा

नालासोपारा (उत्तरशक्ति)। शनिवार को नालासोपारा पूर्व में शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा आयोजित सेवानिवृत्त शिक्षक सम्मान समारोह वास्तव में शिक्षक समाज के सम्मान के साथ-साथ समाज को जोड़ने और नई ऊर्जा देने का सराहनीय प्रयास रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्योगपति एवं समाजसेवी विजेंद्र रामचंद्र सिंह ने की। इस अवसर पर शिक्षक आमदार ज्ञानेश्वर महात्रे (कोंकण विभाग), उप महापौर मार्शल लोपिश एवं आरोग्य सभापति निलेश देशमुख के कर कमलों से सेवानिवृत्त शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों, प्रधानाचार्यों, वरिष्ठ शिक्षकों, समाजसेवियों, कवियों एवं विभिन्न क्षेत्रों की अनेक विभूतियों को सम्मानित किया गया।संस्था के अध्यक्ष के. पी. सिंह चौहान ने अपने ओजस्वी वक्तव्य से संस्था की उपलब्धियों और निरंतर चल रहे सेवा एवं समाज-जोड़ो अभियान को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। संस्था के पदाधिकारी महासचिव अशोक सिंह, दुर्गाप्रसाद मिश्र, बालमुकुंद दूबे, रामजनम मिश्र,अशोक पाठक जी, गोपाल निषाद, संतोष सिंह (प्रिंसिपल), अनुराग यादव, अरविंद तिवारी, श्यामभूषण पाठक, धर्मेंद्र शुक्ला, जयमाला सिंह सहित सभी साथियों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में पूरी निष्ठा और मेहनत से अपनी भूमिका निभाई। संस्था के मार्गदर्शक बंश नारायण मिश्र का निरंतर साथ और उपस्थिति भी प्रेरणादायी रही। नगरसेवक सचिन देसाई की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन जिस भावना से लोगों को जोड़ने, सम्मान देने और प्रोत्साहित करने का कार्य कर रही है, वह निश्चित रूप से प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। कार्यक्रम का संचालन अशोक बी सिंह ने किया।

क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, गाजीपुर में कवि सम्मेलन आयोजित

वाराणसी। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 11 सितम्बर, 2026 को क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, गाजीपुर में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। गाजीपुर के प्रतिष्ठित कवियों ने विविध काव्य प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। हरिशंकर पांडेय, रमाकांत राही, अमरनाथ तिवारी, अक्षय पांडेय, आशुतोष श्रीवास्तव एवं गोपाल गौरव ने हास्य, व्यंग्य, वीर रस, संवेदना और सामाजिक सरोकारों से युक्त रचनाएँ प्रस्तुत कीं। श्रोताओं ने करतल ध्वनि से उनका उत्साहवर्धन किया।संस्थान की ओर से सुनील सिंह ने काव्य पाठ किया, जबकि प्रधानाचार्य पवन मिश्र ने संक्षिप्त एवं रोचक रामकथा प्रस्तुत की कार्यक्रम का संचालन प्रारंभ में सुनील सिंह तथा बाद में सुप्रसिद्ध कवि एवं मंच संचालक मिथिलेश गहमरी ने किया। उनके प्रभावशाली संचालन ने कार्यक्रम को जीवंत बना दिया।

कार्यक्रम ने साहित्य एवं कविता के प्रति रुचि बढ़ाने के साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का संदेश दिया। आयोजन की सफलता में समिति तथा संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सराहनीय योगदान रहा।

चयनित चिकित्सकों व अभिभावकों का हुआ सम्मान

उदयपुरवाटी। जयपुर रोड़ तहसील कार्यालय के सामने कस्बे की सूर्य नगर कॉलोनी में स्थित आयुर्वेदिक पंचकर्म हॉस्पिटल में रविवार को एक सम्मान समारोह वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी डॉ राजेन्द्र कुमावत के मुख्यातिथ्य में हुआ,जिसमें हाल ही में यहां सर्विस देने वाले दो चिकित्सकों का सरकारी सेवा में चयन होने के उपलक्ष्य में यहां के हॉस्पिटल प्रभारी डॉ विनोद कुमार सैनी ने चयनित दोनों डॉक्टर्स व अपने गुरुजनों व अभिभावकों का सम्मान- सत्कार माल्यार्पण कर, साफा पहनाकर,मोमेंटो आदि प्रदान कर किया गया। डॉ विनोद कुमार सैनी द्वारा आयोजित हुए इस स्वागत सत्कार समारोह में हाल ही में चयनित हुए डॉ. सरिता सैनी, डॉ. रवि मीणा,डॉ प्रियंका,डॉ, भोलाराम फिजियोथैरेपिस्ट, वैद्य पोखर मल सैनी, कैलाश सैनी(गुरुजी),मातादीन मीणा,नर्सिंग स्टाफ में करण,विकास,रोशन, सुशीला पुजा सैनी,एवं खुशी की उपस्थिति रही।

एस्टर गार्डियंस ग्लोबल नर्सिंग अवार्ड 2026 के तहत युकेकी अगिमोल प्रदीप 2,50,000 अमेरिकी डॉलर पुरस्कार से सम्मानित

मुंबई/कोच्चि। 214 देशों और इकॉनमी से आए 1,34,000 से ज्यादा रजिस्ट्रेशन में से भारतीय मूल की वड की रहने वाली अगिमोल प्रदीप को 'एस्टर गार्डियंस ग्लोबल नर्सिंग अवार्ड 2026' का विजेता घोषित किया गया है। वह किंग्स कॉलेज हॉस्पिटल में सीनियर ट्रांसप्लांट कोऑर्डिनेटर और युके की सैलफोर्ड यूनिवर्सिटी में ऑनरेरी सीनियर लेक्चरर के पद पर कार्यरत हैं। उन्हें भारत के कोच्चि में आयोजित एक भव्य समारोह में 2,50,000 अमेरिकी डॉलर का प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया। यह अवॉर्ड नर्स अगिमोल प्रदीप को केरल के मुख्यमंत्री वी. डी. सतीसन ने दिया। उनके साथ एस्टर डीएम क्वालिटी केयर लिमिटेड के फाउंडर और एग्जीक्यूटिव चेयरमैन डॉ. आजाद मूपेन; एस्टर डीएम हेल्थकेयर की मैनेजिंग डायरेक्टर और ग्रुप उएड तथा एस्टर डीएम क्वालिटी केयर लिमिटेड की एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अलीशा मूपेन, एस्टर डीएम क्वालिटी केयर लिमिटेड के डायरेक्टर टी. जे. विल्सन, और एस्टर डीएम क्वालिटी केयर लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर और ग्रुप उएड वरुण खन्ना भी मौजूद थे। 2021 में लॉन्च होने के बाद से एस्टर गार्डियंस ग्लोबल नर्सिंग अवार्ड एक ग्लोबल मंच बन गया है। यह उन नर्सों को सम्मानित करता है जो इस पेशे को बेहतर बना रही हैं और सार्थक बदलाव ला रही हैं। इस साल 214 देशों और इकॉनमी से 134,000 रजिस्ट्रेशन प्राप्त हुए। यह विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों, समुदायों और विषयों में काम करने वाली नर्सों की कहानियों को सामने लाते हैं, नर्सिंग के वास्तविक वैश्विक महत्व और दुनिया भर में हेल्थकेयर सिस्टम और समाज पर नर्सों के प्रभाव पर प्रकाश डालते हैं।

इस समारोह में विश्व स्वास्थ्य संगठन के डॉयरेक्टर जनरल डॉ. टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयेसस ने एक खास संदेश भी दिया। उन्होंने फाइनलिस्ट को बधाई दी और दुनिया भर में नर्सों और हेल्थकेयर में उनके योगदान को सम्मान देने में 'एस्टर गार्डियंस ग्लोबल नर्सिंग अवॉर्ड' की अहम भूमिका की भी सराहाना की।

अपनी जीत पर खुशी व्यक्त करते हुए नर्स अगिमोल प्रदीप ने बताया, ₹एस्टर गार्डियंस ग्लोबल नर्सिंग अवॉर्ड जीतना मेरे लिए बहुत बड़े सम्मान की बात है। लेकिन इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि इस सम्मान के जरिए मुझे अपने पूरे जीवन के काम को और आगे बढ़ाने का मौका मिला है। मैंने देखा है कि एक जैसे जातीय यानी मैचिंग या सामुदायिक पृष्ठभूमि वाले डोनर न मिलने की वजह से अल्पसंख्यक समुदायों के मरीजों को जीवन बचाने वाले ट्रांसप्लांट के लिए लंबे समय तक इंतजार करना पड़ता है।

रानी बाजार में गणेश पूजा पंडाल बनाते समय बवाल,दो युवकों पर मारपीट और सामान क्षतिग्रस्त करने का आरोप ,पुलिस की मौजूदगी में हुआ पंडाल निर्माण कार्य

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। जनपद में राजातालाब के रानी बाजार स्थित तालाब के पास गणेश पूजन उत्सव के लिए पंडाल बनाते समय दूसरे समुदाय के युवकों द्वारा बवाल करने का मामला सामने आया है। आयोजन समिति के सदस्यों का आरोप है कि युवकों ने वाद विवाद और मारपीट की तथा पंडाल के लिए लाए गए सामान को क्षतिग्रस्त कर दिया। इस संबंध में टिंकू मोदनवाल ने बताया कि गणेश जन्मोत्सव की तैयारी चल रही थी और पंडाल का सामान मौके पर रखा था। रविवार दोपहर बाजार के ही आसिफ और राजू ने पंडाल स्थल पर पहुंचकर विवाद किया और रखे सामान को क्षतिग्रस्त कर दिया। मना करने पर दोनों ने आशु पांडेय और टिंकू के साथ मारपीट की। पीड़ित पक्ष ने पुलिस को लिखित तहरीर दी है। सूचना पर राजातालाब पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों युवकों को पूछताछ के लिए चौकी पर ले गई।

गौ हत्या बंद एवं गौ रक्षा के लिए 51 करोड़ हस्ताक्षर अभियान का आयोजन

मुंबई। घाटकोपर पश्चिम के अमृतनगर स्थित श्री संकट मोचन महाबली हनुमान मंदिर एवं श्री शनि मंदिर परिसर में शनिवार को ॐ श्री नारायण सत्संग समिति के तत्वावधान में गौ हत्या बंद एवं गौ रक्षा के सम्मान हेतु 51 करोड़ हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया गया। अभियान में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं राष्ट्रप्रेमी नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए अपने हस्ताक्षर किए। आयोजकों के अनुसार, गौ रक्षा के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से यह हस्ताक्षर अभियान आगे भी मुंबई सहित विभिन्न स्थानों पर चलाया जाएगा। अभियान के निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने के बाद राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं संबंधित अधिकारियों से मुलाकात कर गौ हत्या पर रोक लगाने तथा गौ संरक्षण एवं गौ रक्षा के लिए अपने विचार एवं मांगों को प्रस्तुत किया जाएगा। इस अवसर पर पंडित श्री मृत्युंजय तिवारी,पंडित मधुसूदन उपाध्याय,अरविंद शुक्ला, अजय पांडेय,दिनेश सिंह, निलेश तिवारी गोपाल, पत्रकार आदेश मिश्र, विवेक सिंह माधव,सुनील दुबे, राजेश सिंह,डॉ चंद्रकेश विश्वकर्मा ,चंदू गुप्ता, हरिनारायण यादव, अम्बुज सिंह,जयप्रकाश शर्मा सहित अन्य लोग मौजूद रहे। समिति की ओर से सभी राष्ट्रप्रेमी नागरिकों से इस पुनीत अभियान से जुड़ने और गौ रक्षा के इस प्रयास में सहभागी बनने का आह्वान किया गया। आयोजकों ने कहा कि अधिक से अधिक लोगों की सहभागिता से अभियान को मजबूती मिलेगी।

पूर्व सांसद धैर्यशीलदादा पाटील की पहल से पेण की गणेश प्रतिमाओं को सीधे राजधानी में राजमान्यता

मुंबई। गणेशोत्सव की तैयारियां पूरे जोर-शोर से शुरू हो गई हैं और इस वर्ष पर्यावरण-अनुकूल गणेशोत्सव पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसी बीच, पेण की प्रसिद्ध और पारंपरिक गणेश प्रतिमाओं को एक नई ऊंचाई तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य पूर्व राज्यसभा सांसद तथा भाजपा दक्षिण रायगढ़ जिलाध्यक्ष धैर्यशील पाटील ने किया है। पेण की पारंपरिक गणपति मूर्तिकला केवल पेण की पहचान नहीं है, बल्कि यह पूरे महाराष्ट्र की समृद्ध कला और संस्कृति का गौरव है। इस स्थानीय कला को सीधे राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने के लिए धैर्यशीलदादा पाटील ने विशेष पहल की। उनके नेतृत्व में और पेण की नगरसेविका श्रीमती पल्लवी प्रसाद कालेकर की संकल्पना के तहत, दिल्ली स्थित महाराष्ट्र एम्पोरियम में पेण की प्रसिद्ध गणपति प्रतिमाओं को पहली बार बिक्री के लिए प्रदर्शनी में रखा गया है। विशेष रूप से, धैर्यशील पाटील ने स्वयं दिल्ली स्थित इस प्रदर्शनी केंद्र का दौरा कर पेण के मूर्तिकारों और कलाकारों से आत्मीयता से बातचीत की तथा उनकी कला को प्रोत्साहित किया। उनके इस सक्रिय समर्थन और दूरदर्शिता के कारण दिल्ली के माध्यम से इस कला को देशभर तक पहुंचाने का ऐतिहासिक अवसर पेणवासियों को मिला है। निश्चित रूप से यह पूरे महाराष्ट्र के लिए गर्व की बात है। एक ओर धैर्यशील पाटील की पहल से दिल्ली में पेण की कला को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिल रहा है, वहीं दूसरी ओर मुंबई में भी पेण के मूर्तिकारों को अपना हक का मंच मिला है। ऐन वक्त पर असली शाडू मिट्टी की गणेश प्रतिमा तलाश करने वाले मुंबईकरों के लिए महाराष्ट्र लघु उद्योग विकास महामंडल के माध्यम से एक बेहद उपयोगी पहल की गई है। महामंडल की सह-प्रबंध निदेशक प्रशाली दिगावकर के प्रयासों से कुलाबा स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के ह्यमराठी महाराष्ट्र एम्पोरियमह्न (शॉप नं. अ-30) में पेण के मूर्तिकारों और महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा बनाई गई सुंदर शाडू मिट्टी की गणेश प्रतिमाएं बिक्री के लिए उपलब्ध कराई गई हैं।

शहीद उमानाथ सिंह का बलिदान अविस्मरणीय रहेगा : प्रो . संतोष कुमार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय स्थित इंजीनियरिंग संस्थान में रविवार को अमर शहीद उमानाथ सिंह की 32 वीं पुण्यतिथि श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर इंजीनियरिंग संस्थान के भौतिक विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. संतोष कुमार और स्वर्गीय उमानाथ सिंह के पुत्र पूर्व सांसद डॉ. के. पी. सिंह ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें याद किया। प्रो. संतोष कुमार ने कहा कि शहीद उमानाथ सिंह का बलिदान, समर्पण और उनके द्वारा किए गए कार्य देश, धर्म और समाज के लिए अनमोल है। उनका योगदान हर भारतीय के लिए प्रेरणास्रोत है और उन्हें हम भुला नहीं सकते। देश की सेवा में उनके अद्भुत संघर्ष और आत्मबलिदान को आने वाली पीढ़ियां सदैव याद रखेंगी।

पूर्व सांसद डॉ. के. पी. सिंह ने शहीद उमानाथ सिंह के जीवन एवं उनके राजनीतिक संघर्ष को विस्तार से प्रस्तुत करते हुए कहा कि वे 13 अगस्त 1938 को जौनपुर के महरूपुर गांव में एक संस्कारवान परिवार में जन्में। बाल्यकाल से ही उन्होंने उत्तरदायित्व, धीरता और राष्ट्रप्रेम का परिचय दिया। वर्ष 1957 में भारतीय जनसंघ से जुड़कर उन्होंने राष्ट्रसेवा का कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने 1957 के खाद्य आन्दोलन, 1975 के आपातकाल एवं 1990 के राम जन्मभूमि आंदोलन में भाग लेते हुए जेल यात्रा भी की। उनकी ईमानदारी, सादगी और संघर्षशीलता हमेशा याद की जाएगी।

कार्यक्रम में डॉ. दिव्येंदु मिश्र, राकेश तिवारी, मनोज सिंह, मनोज यादव, श्याम त्रिपाठी, मनु मिश्र सहित बड़ी संख्या में उपस्थित छात्रों ने श्रद्धासुमन अर्पित किया और शहीद उमानाथ सिंह के प्रति अपने भाव प्रकट किए।

कांस्य में बोलती सभ्यता, चित्रों में जीवंत इतिहास

* चेन्नई में छह दिवसीय मीडिया दौरे की यादगार शुरूआत पीआईबी वाराणसी कार्यालय के आयोजन में सरकारी संग्रहालय पहुंचे पत्रकार
* चेन्नई के सरकारी संग्रहालय में काशी से पहुंचे पत्रकारों ने देखी दक्षिण भारत की कला-संस्कृति की समृद्ध विरासत

-सुरेश गांधी

चेन्नई। चेन्नई की धरती पर छह दिवसीय मीडिया दौरे का पहला दिन इतिहास, कला और संस्कृति की अनमोल विरासत से रूबरू कराने वाला रहा। पीआईबी वाराणसी कार्यालय की ओर से आयोजित यात्रा के पहले दिन रविवार को पत्रकारों के दल ने एग्मोर स्थित चेन्नई के सरकारी संग्रहालय का भ्रमण किया। संग्रहालय की दीघाओं में प्रवेश करते ही लगा मानो पत्थर, कांस्य, चित्र और पुरातात्विक अवशेष सदियों की कहानी सुनाने लगे हों। दक्षिण भारत की सांस्कृतिक चेतना और भारतीय कला की विविधता को एक ही परिसर में देखना इस यात्रा की यादगार शुरूआत बन गया।

1851 में रखी गई थी विरासत को सहेजने की नींव

एग्मोर का सरकारी संग्रहालय भारत के सबसे महत्वपूर्ण संग्रहालयों में गिना जाता है। 1851 में स्थापित यह संग्रहालय भारतीय संग्रहालय, कोलकाता के बाद देश के सबसे पुराने संग्रहालयों में शामिल है। विशाल परिसर में फैला यह संग्रहालय दक्षिण भारतीय इतिहास, पुरातत्व, कला, संस्कृति और प्राकृतिक विरासत का अनूठा दस्तावेज है। यहां रखी वस्तुएं केवल देखने भर की चीजें नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की निरंतर यात्रा की जीवंत कड़ियां हैं।

संग्रहालय की सबसे बड़ी विशेषताओं में दक्षिण भारतीय कांस्य प्रतिमाओं का विशाल संग्रह शामिल है। ब्रॉन्ज गैलरी में पहुंचते ही चोलकालीन कला की उत्कृष्टता सामने आती है। यहां की कांस्य प्रतिमाओं में शिल्पकारों की कल्पना, आध्यात्मिक चेतना और धातु-कला का अद्भुत मेल दिखाई देता है।

नटराज के रूप में साकार हुआ नृत्य और दर्शन

ब्रॉन्ज गैलरी का नटराज विशेष आकर्षण का केंद्र है। नृत्यरत शिव की यह प्रतिमा केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन, कला और सृष्टि के निरंतर प्रवाह का कलात्मक रूपक प्रतीत होती है। इसके साथ राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान की कांस्य प्रतिमाएं भी दक्षिण भारतीय मूर्तिकला की बारीकी और सौंदर्य को सामने रखती हैं।

चोलकालीन कांस्य प्रतिमाओं की यह परंपरा भारतीय मूर्तिकला के स्वर्णिम अध्यायों में मानी जाती है। संग्रहालय की यह दीर्घा इस बात का प्रमाण है कि सदियों पहले दक्षिण भारत में धातु को आकार देने वाले कलाकारों ने किस ऊंचाई की कलात्मक दृष्टि विकसित कर ली थी।

पुरातत्व दीघाओं में सदियों का सफर

संग्रहालय का पुरातत्व खंड दक्षिण भारत के गौरवशाली अतीत का विस्तृत परिचय कराता है। चोल, विजयनगर, होयसल और चालुक्य काल से जुड़े पुरावशेष यहां इतिहास के अलग-अलग पड़ावों को सामने रखते हैं। पत्थर की प्रतिमाओं से लेकर प्राचीन कलाकृतियों तक, प्रत्येक वस्तु अपने समय की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का संकेत देती है।

प्राचीन सिक्कों का संग्रह तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था और राजसत्ता की झलक देता है, जबकि अस्त्र-शस्त्र, कठपुतलियां, नृवंशविज्ञान संबंधी वस्तुएं और संरक्षित पुरावशेष दक्षिण भारत के लोकजीवन और सांस्कृतिक विविधता से परिचित कराते हैं।

चित्रों में राजदरबार से आधुनिकता तक

संग्रहालय परिसर की नेशनल आर्ट गैलरी कला प्रेमियों के लिए अलग आकर्षण रखती है। यहां पारंपरिक और आधुनिक चित्रकला की दुर्लभ कृतियों का संग्रह है। राजा रवि वर्मा की कलाकृतियां भारतीय चित्रकला के उस दौर की याद दिलाती हैं, जब पौराणिक पात्रों और भारतीय समाज को यथार्थपरक चित्रों के माध्यम से नया दृश्य रूप मिल रहा था।

गैलरी में राजस्थानी चित्रकला, मुगलकालीन कला, 17वीं शताब्दी की दक्कनी चित्रकला तथा विभिन्न कालखंडों की दुर्लभ कृतियां भारतीय चित्रकला की विविध परंपराओं को एक साथ प्रस्तुत करती हैं। वहीं कंटेम्परेरी आर्ट गैलरी में ब्रिटिश काल के व्यक्तिचित्रों से लेकर आधुनिक कला तक का संसार दिखाई देता है।

बच्चों के लिए इतिहास बना रोचक अनुभव

संग्रहालय परिसर का चिल्ड्रेन म्यूजियम भी अपनी तरह की महत्वपूर्ण पहल है। यहां शैक्षिक और संवादात्मक प्रदर्शनियों के जरिए बच्चों को इतिहास, विज्ञान, कला और संस्कृति से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। किताबों में पढ़े जाने वाले इतिहास को वस्तुओं और दृश्यों के माध्यम से समझने का अवसर बच्चों के लिए इसे आकर्षक बनाता है।

म्यूजियम थिएटर में संस्कृति का जीवंत मंच

संग्रहालय का म्यूजियम थिएटर भी इस परिसर की सांस्कृतिक पहचान को विस्तार देता है। यहां अकादमिक कार्यक्रमों के साथ नाटक, संगीत समारोह और विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित होती हैं। इस तरह संग्रहालय केवल अतीत को संरक्षित करने वाला स्थान नहीं, बल्कि वर्तमान में संस्कृति के संवाद का भी मंच बना हुआ है।

किताबों में सुरक्षित सदियों की स्मृतियां

संग्रहालय परिसर में स्थित कॉननेमारा पब्लिक लाइब्रेरी इस सांस्कृतिक यात्रा को साहित्य से जोड़ती है। दुर्लभ और प्राचीन प्रकाशनों तथा महत्वपूर्ण साहित्यिक संग्रहों के लिए प्रसिद्ध यह पुस्तकालय शोधार्थियों और पुस्तक प्रेमियों के लिए विशेष महत्व रखता है। संग्रहालय की कलाकृतियां जहां पत्थर और धातु में इतिहास को सुरक्षित रखती हैं, वहीं पुस्तकालय की पुस्तकों में वही इतिहास शब्दों के रूप में सांस लेता नजर आता है।

काशी से चेन्नई तक संस्कृति का सेतु

पीआईबी वाराणसी कार्यालय के आयोजन में शुरू हुई यह यात्रा पत्रकारों के लिए केवल एक मीडिया दौरा नहीं, बल्कि भारत की विविध सांस्कृतिक धाराओं को करीब से समझने का अवसर भी बनी। काशी की प्राचीन आध्यात्मिक-सांस्कृतिक परंपरा से आए पत्रकारों के लिए चेन्नई के संग्रहालय में दक्षिण भारत की कला और इतिहास को देखना देश की सांस्कृतिक एकता की उस तस्वीर से परिचित होना था, जिसमें भाषाएं और क्षेत्र अलग हो सकते हैं, लेकिन विरासत की आत्मा एक है।

एग्मोर का सरकारी संग्रहालय इस यात्रा के पहले पड़ाव में ही यह संदेश दे गया कि भारत का इतिहास किसी एक काल, क्षेत्र या भाषा की कहानी नहीं है। यह उन असंख्य सभ्यताओं, कलाओं और परंपराओं का सम्मिलित आख्यान है, जो सदियों से एक-दूसरे में रंग घोलते हुए आज के भारत की पहचान गढ़ रहे हैं।

कैनवास पर अंग्रेज, पत्थरों में भारत की आत्मा

चेन्नई के एग्मोर संग्रहालय में गांधी से गवर्नर तक, विष्णु से गणेश तक और विजयनगर से होयसल तक—एक परिसर में सदियों का अद्भुत सांस्कृतिक सफर. जहां कभी हुकूमत करने वालों के चेहरे तैलचित्रों में कैद हैं, वहीं पत्थरों में तराशी भारतीय सभ्यता आज भी जीवित है, मूर्तियां, कांस्य प्रतिमाएं, सिक्के और पुरातात्विक अवशेष सुनाते हैं दक्षिण भारत की हजारों वर्ष पुरानी कहानी...

-सुरेश गांधी

इतिहास को अगर सिर्फ तारीखों में पढ़ा जाए तो वह सूखा दिखाई देता है, लेकिन वही इतिहास जब किसी पत्थर की नसों में, किसी कांस्य प्रतिमा की मुस्कान में, किसी पुराने सिक्के की धातु में और किसी तैलचित्र की आंखों में दिखाई देने लगे तो वह जीवंत हो उठता है। चेन्नई के एग्मोर स्थित Government Museum का विशाल परिसर ऐसा ही अनुभव कराता है। यहां एक तरफ औपनिवेशिक दौर की सत्ता के चेहरे

कला के कैनवास पर संरक्षित हैं, तो दूसरी तरफ दक्षिण भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक और शिल्प परंपरा पत्थरों और कांस्य में सांस लेती दिखाई देती है।

यह केवल संग्रहालय नहीं, बल्कि भारत की स्मृति का एक विराट घर है—जहां एक ही यात्रा में कला, आस्था, साम्राज्य, स्थापत्य, पुरातत्व और अर्थव्यवस्था के इतिहास यानी सिक्कों तक से सामना होता है।

जहां अंग्रेजी हुकूमत के चेहरे आज इतिहास हैं

एग्मोर की कला दीर्घा का औपनिवेशिक हिस्सा अपने आप में एक अलग कहानी कहता है। आधिकारिक संग्रह विवरण के अनुसार यहां ब्रिटिश गवर्नरों और गवर्नर-जनरलों के 12 आदमकद तैलचित्र सजावटी फ्रेमों में संरक्षित हैं। साथ ही राजा रवि वर्मा के 12 चित्र भी संग्रह का हिस्सा बताए गए हैं। ब्रिटिश सरकार के दौर में औपचारिक समारोहों में इस्तेमाल होने वाली चार सीटों वाली गवर्नर की बग्घी भी यहां प्रदर्शित की गई है। यहीं इतिहास का सबसे दिलचस्प विरोधाभास सामने आता है। कभी जिन चेहरों के इशारे पर शासन चलता था, वे आज संग्रहालय की दीवारों पर टंगे हैं। सत्ता चली गई, साम्राज्य चला गया, लेकिन चेहरे इतिहास की स्मृति में रह गए।और इसी के बरक्स भारतीय कला अपनी अलग आवाज में खड़ी दिखाई देती है. साम्राज्य का वैभव कैनवास पर है, भारत की आत्मा पत्थरों में।

गांधी की सादगी और सत्ता के चित्रों का मौन संवाद

औपनिवेशिक सत्ता के भव्य चित्रों के बीच गांधी की छवि को देखना अपने आप में इतिहास का एक प्रतीकात्मक अनुभव बन जाता है। एक तरफ औपचारिक वेशभूषा, पद और सत्ता का दृश्यात्मक प्रभाव। दूसरी तरफ खादी, सादगी और जनशक्ति का चेहरा। इतिहास का यह संवाद किसी किताब में लिखे वाक्य की तरह नहीं, बल्कि आंखों के सामने खड़े दो अलग-अलग भारत की तरह दिखाई देता है।एक भारत वह था जिसे साम्राज्य नियंत्रित करना चाहता था।ल्लदूसरा वह भारत था जिसने अंततः अपने भविष्य का फैसला खुद किया।

पत्थर में उतर आई आस्था

संग्रहालय की पुरातत्व और कांस्य दीघाएं इस यात्रा को औपनिवेशिक काल से बहुत पीछे ले जाती हैं।

भगवान विष्णु, त्रिपुरांतक, दक्षिणामूर्ति, श्रीदेवी, पार्वती, गणेश, लिंगोभावा, गरुड़ और सुब्रह्मण्य जैसी प्रतिमाओं में केवल धार्मिक भाव नहीं, बल्कि कलाकार की दृष्टि, शरीर-विन्यास, आभूषण, मुद्रा और शिल्प की बारीकी भी दिखाई देती है। यहां मूर्ति केवल पूजा की वस्तु नहीं रह जाती। वह अपने समय की कला, तकनीक और सामाजिक कल्पना का दस्तावेज बन जाती है। सरकारी संग्रहालय के पुरातत्व विवरण के अनुसार यहां दक्षिण भारतीय कांस्य प्रतिमाओं का असाधारण संग्रह है। इसमें पल्लव, चोल, विजयनगर और बाद के कालों की प्रतिमाएं शामिल हैं। संग्रहालय विशेष रूप से तिरुवालंगाडु के नटराज, राम समूह, विष्णु, अर्धनारीश्वर और पार्वती जैसी कृतियों को महत्वपूर्ण उदाहरणों के रूप में दर्ज करता है।

विजयनगर से होयसल, काकतीय से नोलम्बा—पत्थरों में इतिहास की परतें

एग्मोर संग्रहालय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां दक्षिण भारत की शिल्प परंपरा को किसी एक राजवंश या कालखंड तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता।विजयनगर काल की प्रतिमाएं उस समय की भव्यता और धार्मिक स्थापत्य की शक्ति का अहसास कराती हैं। होयसल कला में पत्थर जैसे नरम होकर सूक्ष्म अलंकरण और बारीक आकृतियों को अपने भीतर समेट लेता है। काकतीय परंपरा दक्षिण के मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला की अपनी विशिष्ट पहचान सामने रखती है।

वहीं नोलम्बा शिल्प परंपरा दक्षिण भारत की उन कलात्मक धाराओं की याद दिलाती है जिनकी चर्चा आम जनजीवन में कम होती है, लेकिन जिनकी मूर्तियां भारतीय कला के विकास की महत्वपूर्ण कड़ियां हैं।

इन प्रतिमाओं के सामने खड़े होकर महसूस होता है कि दक्षिण भारत का इतिहास केवल राजाओं की लड़ाइयों का इतिहास नहीं है। यह शिल्पियों की उंगलियों का इतिहास भी है।

किसी पत्थर में कलाकार का नाम नहीं, लेकिन उसकी पहचान अमर

इन मूर्तियों को बनाने वाले अनेक कलाकार इतिहास की पुस्तकों में अपना नाम दर्ज नहीं करा सके। न कोई हस्ताक्षर। न कोई आत्मकथा। न कोई चित्र। लेकिन उनके हाथों की छाप आज भी पत्थरों पर मौजूद है। उन्होंने देवताओं को आकार दिया, लेकिन वास्तव में वे अपने समय की सौंदर्य-दृष्टि को आकार दे रहे थे। उन्होंने आभूषण तराशे तो उस समय की वेशभूषा भी बचा दी। उन्होंने मुकुट बनाए तो राजकीय और धार्मिक प्रतीकों का इतिहास भी सुरक्षित कर दिया। उन्होंने चेहरे बनाए तो सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों के लिए उस दौर की कल्पना छोड़ गए। इस अर्थ में संग्रहालय की हर मूर्ति एक अनाम कलाकार की जीवनी है।

कांस्य में जमी हुई गति

एग्मोर की कांस्य परंपरा संग्रहालय की सबसे बड़ी शक्तियों में है। चोल काल की कांस्य कला विशेष रूप से भारतीय मूर्तिशिल्प की विश्व-प्रसिद्ध परंपराओं में गिनी जाती है। यहां नटराज जैसी प्रतिमाएं यह दिखाती हैं कि धातु को केवल ठोस पदार्थ मानने के बजाय कलाकार ने उसमें गति, लय और ब्रह्मांडीय ऊर्जा तक को व्यक्त किया।

सरकारी विवरण के अनुसार संग्रहालय में पल्लव और चोल काल के साथ विजयनगर और बाद के दौर की कांस्य प्रतिमाएं भी संरक्षित हैं। तिरुवालंगाडु का नटराज और तिरुवेंकाडु का अर्धनारीश्वर जैसे उदाहरण विशेष महत्व रखते हैं।

सिक्कों की गैलरी—छोटी-सी धातु में बड़ी अर्थव्यवस्था

संग्रहालय का Numismatics यानी सिक्का संग्रह इतिहास का एक और अनूठा दरवाजा खोलता है।

राजाओं के सिक्के सिर्फ मुद्रा नहीं होते। वे अपने समय की अर्थव्यवस्था, सत्ता, व्यापार, प्रतीकों और राजनीतिक प्रभाव की छोटी-सी मुहर होते हैं। किस शासक ने कौन-सा प्रतीक चुना? किस धातु का इस्तेमाल हुआ? किस भाषा या लिपि में पहचान दर्ज हुई? किस क्षेत्र में मुद्रा चली? इन छोटे-छोटे सवालों से किसी साम्राज्य की आर्थिक और राजनीतिक पहुंच समझी जा सकती है। संग्रहालय के आधिकारिक विवरण के अनुसार सुरक्षा कारणों से सभी मूल सिक्कों को सीधे प्रदर्शित करना संभव नहीं है, इसलिए कई मामलों में उनके प्लास्टर और धातु के प्रतिरूप प्रदर्शित किए जाते हैं। यानी यहां एक छोटा-सा सिक्का भी किसी विशाल साम्राज्य की कहानी कह सकता है।

पुरातत्व—मिट्टी, पत्थर और धातु से फिर बनता अतीत

संग्रहालय की Archaeology Section का दायरा केवल मूर्तियों तक सीमित नहीं है। आधिकारिक विवरण में दक्षिण भारत के ऐतिहासिक काल की मूर्तियों, स्थापत्य अवशेषों, धातु और पत्थर के अभिलेखों के साथ लकड़ी की नक्काशी, हाथीदांत, धातु-कला और जड़ाऊ काम जैसी औद्योगिक कलाओं के संग्रह का उल्लेख है। यही वजह है कि एग्मोर का संग्रहालय इतिहास को एक ही कोण से नहीं दिखाता। यह पूछता है— राजा कौन था? लेकिन साथ ही यह भी बताता है— उस दौर का कलाकार कैसा था?

लोग क्या पहनते थे? किस धातु का इस्तेमाल करते थे? मंदिर कैसे बनते थे? व्यापार कैसे चलता था? यानी यहां इतिहास सत्ता से निकलकर समाज तक पहुंचता है।

एक संग्रहालय, 46 गैलरियों का संसार

सरकारी विवरण के अनुसार Government Museum Chennai में 46 गैलरियां हैं और इनके पुनर्गठन तथा आधुनिकीकरण का काम समय-समय पर किया जाता रहा है। कला, पुरातत्व, कांस्य, सिक्के, मानवशास्त्र, प्राकृतिक इतिहास, भूविज्ञान और अन्य विषयों से जुड़े संग्रह इसे बहुस्तरीय संग्रहालय बनाते हैं। यही इसकी सबसे बड़ी खूबसूरती है। एक गैलरी में देवता हैं। दूसरी में राजा। कहीं कलाकार है। कहीं सिक्का। कहीं शिलालेख। कहीं प्रकृति।

और कहीं औपनिवेशिक शासन का चेहरा। मानो पूरा भारत अलग-अलग कमरों में बंटकर भी एक ही परिसर में साथ खड़ा हो।

1851 से चली कहानी

इस संग्रहालय की कहानी भी कम रोचक नहीं है। आधिकारिक इतिहास के अनुसार इसकी शुरूआत 1851 में हुई और प्रारंभ में इसका संबंध भूवैज्ञानिक संग्रह से था। बाद में इसका दायरा पुरातत्व, मानवशास्त्र, प्रागैतिहासिक अध्ययन और प्राकृतिक इतिहास तक फैलता गया। 1854 में संग्रहालय को पैंथियन परिसर में स्थानांतरित किया गया।

समय के साथ यह संग्रहालय केवल वस्तुओं को रखने की जगह नहीं रहा। यह शोध का केंद्र बना। वर्गीकरण हुआ।

कैटलॉग बने। प्रतिमाओं पर अध्ययन हुआ। सिक्कों पर शोध हुआ। कांस्य प्रतिमाओं को वैज्ञानिक तरीके से संरक्षित करने की व्यवस्था विकसित हुई। यानी संग्रहालय के भीतर केवल अतीत सुरक्षित नहीं हुआ, अतीत को समझने की वैज्ञानिक परंपरा भी विकसित हुई।

चेन्नई में भारत का एक मौन महाकाव्य

एग्मोर संग्रहालय से निकलते हुए सबसे ज्यादा जो बात मन में रह जाती है, वह किसी एक मूर्ति या किसी एक चित्र की नहीं होती। वह एक पूरी अनुभूति होती है। एक तरफ अंग्रेजी शासन के चेहरे। दूसरी तरफ गांधी की सादगी।

एक तरफ सत्ता का कैनवास। दूसरी तरफ मंदिरों की पत्थर-भाषा। एक तरफ गवर्नर की बग्घी।

दूसरी तरफ नटराज का ब्रह्मांडीय नृत्य। एक तरफ पुराने सिक्के। दूसरी तरफ उन सिक्कों के पीछे खड़ी सभ्यताएं। यही एग्मोर की असली कहानी है। यहां इतिहास बीता हुआ नहीं लगता। वह सामने खड़ा दिखाई देता है। और शायद संग्रहालय की सबसे बड़ी सफलता यही है कि वह दर्शक को यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि सत्ता बदलती रहती है, राजवंश मिट जाते हैं, साम्राज्य चले जाते हैं—लेकिन कला, स्मृति और संस्कृति समय की सबसे मजबूत शरणस्थली बन जाती हैं। चेन्नई का एग्मोर संग्रहालय इसी अमर स्मृति का एक विराट दस्तावेज है—जहां कैनवास पर साम्राज्य का अतीत है और पत्थरों में भारत की आत्मा आज भी जीवित है।

चयनित चिकित्सकों व अभिभावकों का हुआ सम्मान

उदयपुरवाटी। जयपुर रोड़ तहसील कार्यालय के सामने कस्बे की सूर्य नगर कॉलोनी में स्थित आयुर्वेदिक पंचकर्म हॉस्पिटल में रविवार को एक सम्मान समारोह वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी डॉ राजेन्द्र कुमावत के मुख्यातिथ्य में हुआ, जिसमें हाल ही में यहां सर्विस देने वाले दो चिकित्सकों का सरकारी सेवा में चयन होने के उपलक्ष्य में यहां के हॉस्पिटल प्रभारी डॉ विनोद कुमार सैनी ने चयनित दोनों डॉक्टर्स व अपने गुरुजनों व अभिभावकों का सम्मान-सत्कार माल्यार्पण कर, साफा पहनाकर,मोमेंटो आदि प्रदान कर किया गया। डॉ विनोद कुमार सैनी द्वारा आयोजित हुए इस स्वागत सत्कार समारोह में हाल ही में चयनित हुए डॉ.सरिता सैनी,डॉ.रवि मीणा,डॉ प्रियंका, डॉ. भोलाराम फिजियोथैरेपिस्ट, वैद्य पोखर मल सैनी, कैलाश सैनी (गुरुजी), मातादीन मीणा,नर्सिंग स्टाफ में करण,विकास,रोशन, सुशीला पुजा सैनी एवं खुशी की उपस्थिति रही।

आज हरतालिका तीज व्रत, प्रदोष काल में पूजन विशेष फलदायी

जौनपुर। हरतालिका तीज व्रत इस वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाएगा। आचार्य पं. राजीव मिश्र के अनुसार द्वितीया युक्त तृतीया तिथि में हरतालिका तीज का पूजन नहीं करना चाहिए, भले ही अगले दिन तृतीया का समय कुछ ही मिनटों के लिए क्यों न हो। तृतीया युक्त चतुर्थी में रखा गया तीज व्रत सर्वोत्तम एवं पुण्यफलदायी माना गया है। उन्होंने बताया कि भगवान शिव एवं माता पार्वती का पूजन प्रदोष काल यानी सायंकाल में करना विशेष फलदायी रहेगा। इस दौरान शाम 5:25 बजे से 6:55 बजे तक पूजा-अर्चना का विशेष महत्व रहेगा। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार प्रदोष काल में भगवान शिव और माता पार्वती का पूजन करना हितकारी एवं कल्याणकारी माना गया है। आचार्य पं. राजीव मिश्र, कलवारी शेरवां, जौनपुर (उत्तर प्रदेश) ने प्रेस को यह जानकारी दी। उन्होंने समस्त माताओं एवं बहनों से हरतालिका तीज व्रत श्रद्धापूर्वक रखने तथा भगवान शिव-माता पार्वती की विधि-विधान से पूजा-अर्चना करने की अपील की।

उमरोली के लिटिल फ्लावर स्कूल में नागरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन जागरूकता प्रशिक्षण आयोजित

पालघर(उत्तरशक्ति)। जेलिे के पंचाली, उमरोली स्थित लिटिल फ्लावर इंग्लिश मीडियम स्कूल में 12 सितंबर 2026 को विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए नागरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन जनजागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कक्षा 5वीं से 10वीं तक के विद्यार्थियों तथा विद्यालय के शिक्षकों ने सहभागिता की। प्रशिक्षण के दौरान तीन सत्रों में करीब तीन घंटे तक आपदा प्रबंधन एवं आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

यह प्रशिक्षण पालघर जिला नागरिक सुरक्षा विभाग के उपनियंत्रक के. आर. कुरकुटे की अनुमति एवं मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में विद्यार्थियों को आपदा की स्थिति में बरती जाने वाली सावधानियों, बचाव उपायों तथा आपातकालीन परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से कार्य करने के संबंध में मार्गदर्शन दिया गया। कार्यक्रम में विद्यालय समिति के चेयरमैन प्रकाश विष्णु चौधरी, प्राचार्य सुशील प्रजापती, शेखर राऊत, संगीता पाटील, अनिता गोसावी एवं श्रद्धा पाटील सहित विद्यालय के शिक्षक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। नागरिक सुरक्षा विभाग की ओर से विभागीय क्षेत्ररक्षक, अधिकारी एवं स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण में सक्रिय सहभागिता निभाई। इनमें विभागीय क्षेत्ररक्षक पालघर निलेश सुदाम वझे, स्वयंसेविका तृप्ती बालु वझे, दुर्घटना नियंत्रण अधिकारी प्रिया पाटील, स्वयंसेवक खंडेराव भोईर, स्वयंसेविका अपेक्षा संखे तथा स्वयंसेवक प्रितेश ठाकूर शामिल रहे। सभी अधिकारियों, स्वयंसेवकों, विद्यालय प्रबंधन एवं शिक्षकों के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

संजय उपाध्याय ने कोकण के गणेश भक्तों के लिए 92 बसों को किया रवाना

मुंबई। बोरीवली विधानसभा के लोकप्रिय भाजपा विधायक संजय उपाध्याय ने गणेश उत्सव के दौरान कोकण जाने वाले गणेश भक्तों की सुविधा के लिए बोरीवली विधानसभा से 92 बसों को कोकण के लिए रवाना किया। आज वे खुद बसों के रवाना स्थल पर मौजूद रहे तथा बस में बैठे लोगों को हाथ हिलाकर शुभकामनाएं दी। इस सुविधा से लाभान्वित होने वाले सैकड़ो कोकण वासियों ने विधायक संजय उपाध्याय के प्रति कृतज्ञता करते हुए आभार व्यक्त किया। मुंबई में रहने वाले लाखों कोकड़ वासी गणेश उत्सव के दौरान अपने गांव में रहकर गणपति बप्पा की पूजा अर्चना करते हैं। ऐसे में घर जाने को लेकर उनके मन में उत्साह देखने को मिलता है।

केविनकेयर और एमएमए ने 15वें चिन्निकृष्णन इनोवेशन अवाड्र्स में इनोवेटर्स को सम्मानित किया

मुंबई। केविनकेयर ने मद्रास मैनेजमेंट एसोसिएशन के सहयोग से भारत के होनहार इनोवेटर्स और उभरते आइडिया-मेकर्स को 15वें चिन्निकृष्णन इनोवेशन अवाड्र्स 2026 में सम्मानित किया। यह समारोह चेन्नई के आईआईटी मद्रास रिसर्च पार्क ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ। समारोह में वोल्वो ग्रुप इंडिया के प्रेसिडेंट एवं मैनेजिंग डायरेक्टर कमल बाली मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर उद्योग जगत की प्रमुख हस्तियां और गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे। इस वर्ष पुरस्कारों में ग्रेट आइडियाज श्रेणी की 10 प्रविष्टियों को भी मान्यता दी गई, जिससे ग्रेट आइडियाज और इनोवेशन के लिए देश के सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक के रूप में इसकी स्थिति और मजबूत हुई।

अमेजन इंडिया के विक्रेताओं की संख्या 20 लाख तक पहुंची

मुंबई। त्योहारी मौसम नजदीक आते ही अमेजन इंडिया ने आज घोषणा की कि उसके विक्रेताओं की संख्या 20 लाख के मुकाम को पार कर गई है। मार्केटप्लेस से 3 लाख से ज्यादा नए विक्रेता जुड़े हैं, और यह विक्रेताओं की संख्या में साल दर साल की सबसे तेज बढ़त है। इस बढ़ते विक्रेता समुदाय में हर स्तर के कारोबार शामिल हैं। इनमें टियर 3 कस्बों के पहली पीढ़ी के उद्यमियों से लेकर हजारों स्टॉक कीपिंग यूनिट (एसकेयू) संभालने वाले स्थापित ब्रांड तक शामिल हैं। विक्रेता त्योहारी मौसम की तैयारी कर रहे हैं, और अमेजन का ध्यान Amazon.in पर बिक्री को आसान और सबकी पहुंच में बनाने पर है। इसके लिए कंपनी टूल्स, तकनीक और बुनियादी ढांचे पर काम कर रही है। इनसे विक्रेता अपने उत्पादों का विज्ञापन कर सकेंगे, कारोबार संभाल सकेंगे और ग्राहकों को बेहतर सेवा दे सकेंगे।

अमेजन के विक्रेता आधार के इस विस्तार के पीछे कई बातें हैं: कम सेलिंग फीस, एआई आधारित टूल्स से बिक्री का सरल होना, क्रिएटिव विज्ञापन, और फुलफिलमेंट तथा डिलीवरी नेटवर्क में लगातार निवेश। इस साल की शुरूआत में फीस में हुए बदलाव के बाद 12.5 करोड़ से ज्यादा उत्पादों पर रेफरल फीस शून्य कर दी गई, जिससे देश भर के उद्यमियों के लिए बेचने की लागत घटी। साथ ही अमेजन एआई आधारित सुविधाएं और तरह-तरह के टूल्स विक्रेताओं तक लगातार ज्यादा पहुंचा रहा है। ये टूल्स लिस्टिंग बनाने और उसे बेहतर करने, नए उत्पादों के मौके पहचानने, विज्ञापन क्रिएटिव तैयार करने, इन्वेंट्री की योजना बनाने और आंकड़ों के आधार पर फैसले लेने जैसे कामों में मदद करते हैं।

इन डिजिटल सुविधाओं के साथ अमेजन का देशव्यापी ऑपरेशंस नेटवर्क भी है, जो विक्रेताओं को फुलफिलमेंट और डिलीवरी के कई विकल्प देता है, खासकर तब, जब वे त्योहारों की बढ़ी हुई मांग के लिए तैयारी कर रहे हों। Amazon.in पर सेलर असिस्टेंट इस्तेमाल करने वाले विक्रेताओं की संख्या हर छह महीने में दोगुनी हो रही है, और इस टूल के साथ विक्रेताओं का संवाद साल दर साल 7.5 गुना बढ़ा है। इसके अलावा एआई आधारित टूल्स का इस्तेमाल करने वाले अमेजन विज्ञापनदाताओं का हिस्सा साल दर साल 77% बढ़ा है, और 2026 की पहली तिमाही में एसएमबी ने पिछले साल की इसी अवधि के मुकाबले इन टूल्स से 62% ज्यादा विज्ञापन क्रिएटिव तैयार किए। त्योहारी मौसम से पहले अमेजन इन सुविधाओं को विक्रेताओं तक सीधे पहुंचा भी रहा है। कई शहरों में 20 से ज्यादा सेलर कनेक्ट और ऐड्स हाइव वर्कशॉप हो रहे हैं, जिनमें कैटलॉग ऑप्टिमाइजेशन, इन्वेंट्री प्लानिंग, फुलफिलमेंट और विज्ञापन जैसे विषयों पर टूल्स, जानकारी और रणनीतियां साझा की जा रही हैं।

अमेजन इंडिया में सेलिंग पार्टनर सर्विसेज की डायरेक्टर अरुणा दरयानानी ने कहा, ‘हमारी लगातार कोशिश यही है कि Amazon.in हर आकार के विक्रेता के लिए बेचने की सबसे अच्छी जगह बने। फीस घटाना हो, रोजमर्रा के काम आसान करने वाले एआई टूल्स बनाना हो, या विक्रेताओं को बेहतर फैसले लेने में मदद करने वाली, आंकड़ों पर आधारित जानकारी देना हो, हमारा ध्यान बिक्री को आसान और सबकी पहुंच में बनाने पर है। 20 लाख विक्रेताओं तक पहुंचना साफ दिखाता है कि पूरे भारत के उद्यमी Amazon.in पर कितना भरोसा करते हैं। त्योहारी मौसम की ओर बढ़ते हुए हम ऐसे टूल्स, तकनीक और बुनियादी ढांचे में निवेश करते रहेंगे, जिनसे विक्रेता अपने कारोबार को तैयार कर सकें और ग्राहकों को बेहतर सेवा दे सकें।